# रमज़ान का तोह़फ़ा

*रमज़ान, रोज़ः और ईद से सम्बन्धित उल्लेख*


लेखक–

**मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी**

नाज़िम, नद्‌वतुल उलूमा व अध्यक्ष, आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड

अनुवादक–

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी



प्रकाशक–

मजलिसे तह़क़ीक़ात व नश्रियाते इस्लाम

दारुलउलूम नदवतुल् उ़लमा लखनऊ।



© सर्वाधिकार सुरक्षित



| | |
|---|---|
| नाम किताब– | रमज़ान का तोह़फ़ा |
| लेखक– | ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी |
| अनुवादक– | मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी |
| पुस्तक संख्या– | |
| वर्ष– | **2012** |
| मूल्य– | |
| कम्पोज़िंग– | इरफ़ान अह़मद |
| प्रकाशक– | मजलिसे तह़क़ीक़ात व नश्रियाते इस्लाम,<br>दारुलउलूम नदवतुल् उ़लमा लखनऊ। |

# विषय सूची


| विषय | पृष्ठ सं० |
|---|---|
| मुक़द्मः | 5 |
| क़ुर्आन के नाज़िल होने का ज़माना | 8 |
| रोज़ः का महीना *(ख़ैर व बरकत और रूहानी तर्बियत का सालाना निज़ाम)* | 12 |
| नेकियों का मौसम | 14 |
| रमज़ानुल् मुबारक *(मुसलमानों की एक बड़ी दीनी दौलत)* | 17 |
| ज़मीनी मख़्लूक़-आसमानी मख़्लूक़ | 20 |
| नेअ़मत का महीना | 21 |
| तरावीह़ और रमज़ान *(क़ुर्आन मजीद की हिफ़ाज़त का अहम ज़रिया)* | 24 |
| रोज़ः और उसका तोह़फ़ा....ईद | 29 |
| रमज़ानुल् मुबारक का पैग़ाम | 33 |
| अल्लाह की नेअ़मतें | 34 |
| मुसलमानों की ईद.....शैतान का रोज़ः | 45 |
| ईद की ख़ुशी | 47 |
| शैतान का रोज़ः | 42 |
| ईदुल फ़ित्र एक माह के तर्बियती निज़ाम | 49 |




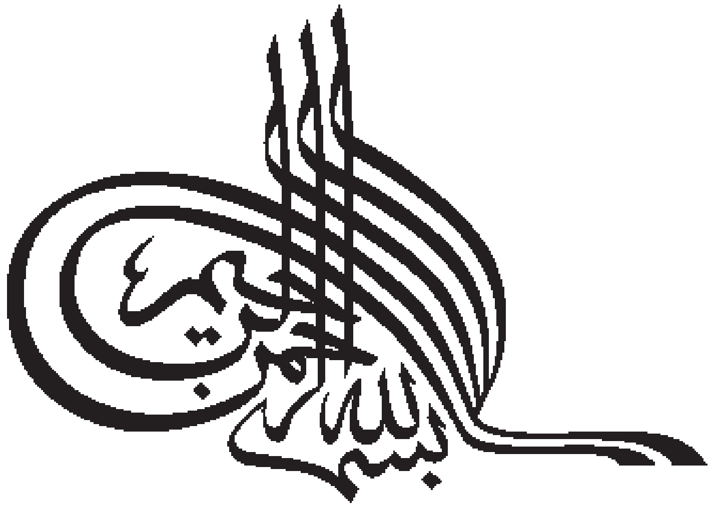

# बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

**الحمد لله الذى كفىٰ وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد!**

अल्लाह के इन्आमात में से एक इन्आम रमज़ानुल् मुबारक का महीना है, जिस में एक-एक नेकी का सत्तर से सात सौ गुना तक अल्लाह तआला अपने बन्दों को सवाब अ़ता फ़रमाता है, इस से नेकी का ऐसा माहौल ऐसा बन जाता है कि बन्दे के दिल का मैलान बुराई की ओर कम से कम बल्कि भलाई की ओर ज़्यादह से ज़्यादह हो जाता है।

इसी मुबारक महीने में रोज़ः जैसा अहम रुक्न इस्लाम ने फ़र्ज़ किया कि उस का दिन रोज़ः की हालत में गुज़ारा जाएगा, उस में रोज़ः रखने का बदला अपने लिए ख़ास किया है। इर्शाद हैः-

"**الصوم لى وانا اجزى به**" बाज़ रिवायतों में "**اجزى به**" है।

यानी इस का बदला मैं हूँ। इस का पहला अ़शरह (दस दिन) रहमत का और दूसरा अ़शरह मग़्फ़िरत का और तीसरा अ़शरह जहन्नम से आज़ादी का है।

रमज़ानुल् मुबारक के इस महीने में नेक अ़मल को आसान बनाने के लिए शैतान को क़ैद कर दिया जाता है और इस में रात के क़याम यानी तरावीह को सवाब की चीज़ बनाकर क़ुर्आन मजीद की हिफ़ाज़त का भी एक मुस्तक़िल निज़ाम क़ायम किया।

यही वह मुबारक महीना है जिस में क़ुर्आन मजीद नाज़िल हुआ और अल्लाह तआला का इर्शाद है-

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِىْ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ
فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۚ (सूरः बक़रः आयत नं० 185)

(महीना रमज़ान का वह है जिस में क़ुर्आन नाज़िल हुआ। लोगों के वास्ते हिदायत है और रौशन दलीलें राह पाने की और हक़ को बातिल से जुदा करने की, तो जो कोई पाये तुम में से इस महीने को तो ज़रूर रोज़े रखे।)

और अल्लाह ने यह इन्आम फ़रमाया कि उस की एक रात को हज़ार



महीनों की रातों से बेहतर और बहुत ज़्यादह हासिल करने का ज़रिया क़रार दे दिया और इस को भी क़ुर्आन मजीद के नुज़ूल से जोड़ दिया। फ़रमायाः-

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ
فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝ سَلٰمٌ ۚ هِىَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

"हम ने इस को (यानी क़ुर्आन मजीद को) शबे क़द्र में उतारा और जानते हो कि शबे क़द्र क्या है? शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। उतरते हैं फ़रिश्ते और रूहुल् क़ुदुस (हज़रत जिब्रईल अ़लै०) उस में अपने रब के हुक्म से हर काम पर। अमान है वह रात सुबह़ के निकलने तक।"

ख़ुलासा यह है कि इस मुबारक रात में ईमानी ख़ैरो बरकत का एक ख़ास नुज़ूल होता है और फ़रिश्ते हर क़िस्म की भलाई लेकर आसमान से उतरते हैं, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आख़िरी अ़शरे में किसी ताक़ रात में उस के होने की तरफ़ इशारा फ़रमाया और अपने अ़मल से भी तर्ग़ीब दी कि इन रातों में आप (सल्ल०) अ़िबादात का और ज़्यादह एहतिमाम फ़रमाने लगते थे और इस पूरे अ़शरे का एतिकाफ़ फ़रमाते थे यानी मस्जिद के ही हुदूद (सीमा) में रहकर यह पूरा वक़्त गुज़ार देते।

जब बन्दा अपने रब से इस तअ़ल्लुक़ का इज़्हार करता है और यह तक्लीफ़ अल्लाह के लिए बर्दाश्त करता है तो अल्लाह तआला भी बहुत ख़ुश होता है। चुनांचे इस महीने के ख़त्म पर जो रात आती है उस को इन्आम की रात कहा गया। 'लैलतुल् जायज़ा' वाली इस रात में ऐसे मुख़्लिस बन्दों को ख़ूब नवाज़ा जाता है और उस का दिन ईद का दिन बना दिया यानी आ़म ख़ुशी का दिन।

उ़लमा-ए-दीन ने इस विषय पर बहुत सा लिट्रेचर उम्मत के लिए पेश किया है, रमज़ान और रोज़े से सम्बन्धित किताबें लिखी हैं, तरावीह की भी अहमियत व फ़ज़ीलत पर किताबें लिखी गई हैं। हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी, नाज़िम नद्वतुल उ़लमा लखनऊ ने मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर 'तअ़मीरे ह़यात' के लिए रमज़ान, रोज़े और उस के तोहफ़े ईद से मुतअ़ल्लिक़ मज़ामीन (लेख) तहरीर फ़रमाए थे। इस में उस का एक अहम ख़िताब भी है जो इस विषय पर तकिया राय बरेली की मस्जिद में आज से आठ साल पहले किया था, जो बड़ा

रूह़ परवर और ईमान अफ़रोज़ है।

अ़ज़ीज़ी 'मौलवी मह़मूद ह़सन ह़सनी' ने इन्हें इकट्ठा किया तो एक किताब की सूरत हो गई, जो उन के लिए सआ़दत की बात है।

उम्मीद है लोग इस को पढ़ेंगे और फ़ायदा उठाएँगे ताकि इस महीने की सह़ी तौर पर क़द्र की जा सके, अल्लाह तआ़ला क़ुबूल फ़रमाए।

**मुह़म्मद वाज़ेह़ रशीद ह़सनी नदवी**
**तकिया कलां दायरा ह़ज़रत शाह अलमुल्लाह (रह़०)**
**रायबरेली**
**9/रमज़ानुल् मुबारक 1429 हि०**

# कुर्आन के नाज़िल होने का महीना

रमज़ानुल् मुबारक का महीना पूरे हिज्री साल में एक तरह़ का ख़ास और रब्बानी सिफ़त महीना है, अल्लाह तआ़ला ने इस की एक बड़ी खुसूसियत बताई है कि इस में 'कुर्आन मजीद नाज़िल' किया गया जो सह़ी रास्ते की खुली रहनुमाई करता है और ह़क़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ कर देने वाली किताब है।

अल्लाह तआ़ला ने इस किताब-ए-हिदायत को ऐसा बुलन्द रुत्बा और खुसूसियत अ़ता फ़रमाई है कि ज़मीन और ज़मीन वाले इस को आ़म ह़ालात में उठाने की हिम्मत नहीं रखते, लेकिन इन्सानों के फ़ायदे के लिए अल्लाह तआ़ला ने इस को उतारा और इस के उतारने को बड़ी नेअ़मत और ज़मीन वालों के लिए इ़ज़्ज़त क़रार दिया और इस बात का इज़्हार फ़रमाया कि यह कलाम इतना बुलन्द और भारी है कि पहाड़ पर अगर उतारा जाता तो पहाड़ कपकपा जाता और फट जाता।

और एक दूसरे मौक़े पर ऐसी बुलन्द और भारी ताक़त के ज़मीन पर ज़ाहिर होने की मिसाल भी दी कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने तजल्ली देखने की इच्छा की तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर पहाड़ बर्दाश्त कर सकता हो तो सोचो और जब पहाड़ पर एक झलक डाली तो पहाड़ ख़ौफ़ से फट गया। अल्लाह तआ़ला ने कुर्आन मजीद के बारे में इसी तरह़ की मिसाल दी कि पहाड़ पर अगर यह नाज़िल हो तो पहाड़ ख़ौफ़ से फट जाए।

फिर इन्सान के साथ यह करम फ़रमाया कि उस के फ़ायदे के लिए कुर्आन मजीद को ऐसा पर्दे के साथ उतारा कि इन्सान इस को उठा रहा है और कुर्आन मजीद की इसी ख़ास अ़ज़्मत की वजह से अल्लाह तआ़ला ने इस महीने को अ़ज़्मत वाला महीना क़रार दिया, जिस में कुर्आन मजीद आसमाने दुनिया से ज़मीन पर नाज़िल होना शुरु हुआ और रमज़ान के महीने का ज़िक्र फ़रमाते हुए



फ़रमाया कि रमज़ान वह महीना है जिस में कुर्आन नाज़िल किया गया और कुर्आन मजीद वह कलाम है जो इन्सानों के लिए हिदायत का ज़रिया है और हिदायत के लिए खुली दलीलें रखने वाला और ह़क़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ करने वाला है और फ़रमाया कि तुम में जिस को यह महीना मिले वह इस में रोज़ः रखे, वह आयते करीमा यह है-

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْ أُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ ۚ
فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۗ (सूरः बक़रः आयत नं० 185)

इस आयत से यह ज़ाहिर हुआ कि इस महीने में अल्लाह का कलाम पाक नाज़िल होने की वजह से इ़ज़्ज़त मिली और इसी बिना पर इस महीने में कुर्आन मजीद की तिलावत और कुर्आन मजीद से फ़ायदा उठाने के एहतिमाम की ताकीद भी आई है।

यह महीना कुर्आन मजीद के नाज़िल होने से मुनव्वर महीना हो गया और इस के मुनव्वर होने के लिहाज़ से इस में उस ज़ात करीम व अ़ज़ीम शुक्र अदा करने का अ़मली एहतिमाम रखा गया जो रोज़े की शक्ल में और रात की अ़िबादत की शक्ल में नुमायाँ नज़र आता है, इस महीने को यह खुसूसियत अ़ता की गई है कि इस को रब्बुल आ़लमीन के एह़सान का शुक्र अ़िबादत के ज़रिये से इस तरह़ रखा गया कि वह शुक्र व अ़िबादत के लिए ज़माना तर्बियत भी बन गया कि इस महीने को तर्बियत का महीना बना दिया गया।

परवरदिग़ारे आ़लम जिस ने इन्सानों को अपनी बेइन्तिहा नेअ़मतों से नवाज़ा है वह ख़ालिक़ भी है और मालिक भी है जिस का शुक्र उस की मर्ज़ी के लिए अपनी तबीअ़त को अपनी ख़्वाहिश व आराम से हटा कर उस के हुक्म को माना जाए, इन्सान की पसन्द और ख़्वाहिश आ़मतौर पर तीन चीज़ों में होती है।

एक तो खाने पीने की लज़्ज़त, दूसरे ख़्वाहिशे नफ़्स और तीसरे आपस के मामलात में दिलचस्पी का आज़ादाना रवैया।

इन तीन चीज़ों में आ़मतौर पर आदमी अपनी तबीअ़त को लगाता है, अपनी पसन्द के मुताबिक़ खाता पीता है और ख़्वाहिशे नफ़्स का मौक़ा मिलने पर इस को पूरा करता है और आपस में बातचीत की ज़्यादती पर उतर आता है,

किसी को बुरा भला कहता है, किसी की ग़ीबत करता है और किसी की हक़तल्फ़ी और ज़्यादती करता है।

रोज़े में इन तीन चीज़ों से पूरा परहेज़ कराया गया है और चूंकि ग़ैर महदूद मुद्दत (अनिश्चित समय) के लिए कम से कम खाने-पीने को नहीं रोका जा सकता इसलिए इस को टुकड़ों में पूरे महीने में फैला दिया गया है और यह टुकड़े वह हैं जिन में इन आज़ादियों का मौक़ा ज़्यादह मिलता है। जैसे-

फ़ज्र के वक़्त से लेकर शाम तक, रोज़ाना इन हिस्सों में पाबन्दी लगा दी गई और लगातार बार-बार पाबन्दी करने से अ़िबादत व फ़रमाँबरदारी के मौक़े भी बन जाते हैं और बार-बार करने से उस नेकी की मश्क़ व तर्बियत भी एक महीना तक होती है जो साल भर तक इन्सान के लिए अ़मल की बुनियाद बन जाती है कि रोज़ाना दस बारह घंटे जो आदमी के खुली ज़िन्दग़ी यानी दिन के वक़्त के हैं, अपनी पसन्द को कुर्बान कर के अपने परवरदिग़ार के हुक्म पर अ़मल के लिए अपने नफ़्स के तक़ाज़े को दबाकर अपने परवरदिग़ार की रज़ामन्दी के लिए अपने तक़ाज़ों को दबाकर रूहानी तक़ाज़े को पूरा करने का अ़मल।

और इस तरीक़े से इस तर्बियती अ़मल को दो खुसूसियतें हासिल हो गईं, एक तो साल के दूसरे दिनों के मुक़ाबिले में इन दिनों में ज़्यादह से ज़्यादह शुक्र व अ़िबादत करने का मौक़ा, कि जिस के क़ुबूलियत का वादा भी परवरदिग़ार की तरफ़ से किया गया।

रोज़ः जो सुबह़ से शाम तक उस पाबन्दी और एहतियात का नाम है उस के अज्र व सवाब के बारे में ह़दीसों में बड़े ऊँचे शब्द आते हैं।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया तुम्हारा परवरदिग़ार फ़रमाता है:-

**"كل حسنة بعشر امثالها الى سبعمائة ضعف، والصوم لى وانا اجزى به...الخ**

**(सुनन तिर्मिज़ी, अब्वाबुस्सौम, बाब फ़ज़्ल अल् सौम)**

कि हर नेकी का अज्र व सवाब दस गुना से सात सौ गुना तक है और रोज़ः मेरे लिए है और मैं ही इस का बदला देता हूँ।

सह़ीह़ बुख़ारी (किताबुत्तौह़ीद) में है **"لكل عمل كفارة والصوم لى وانا اجزى به"**



मुस्लिम व नसई शरीफ़ में भी इस खुसूसियत का ज़िक्र है। ह़ज़रत शेख़ुल् ह़दीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साह़ब कांधलवी (रह़०) ने लिखा है कि बाज़ मशायख़ ने कहा है कि यह लफ़्ज़ **"اجزىٰ به"** **(उज्ज़ा बिहि)** है यानी यह कि इस के बदले में मैं खुद अपने को देता हूँ और मह़बूब के मिलने से ज़्यादह ऊँचा बदला और क्या हो सकता है? **(फ़ज़ाइले रमज़ान)**

अ़ाम दिनों में शुक्र व अ़िबादत का जो अज्र (बदला) रखा गया है रमज़ान में उस को करने पर सत्तर गुना अज्र रखा गया है, इस की एक खुसूसियत तो यह हुई कि शुक्र व अ़िबादत का यह बहुत बड़ा महीना बन गया और दूसरी खुसूसियत यह कि साल भर के लिए इताअ़ते इलाही के अ़मल की बाक़ायदा तर्बियत का इन्तिज़ाम भी कर दिया गया है।

इस तरह़ मोमिन की ज़िन्दग़ी बराबर अल्लाह की फ़रमाँबरदारी और अ़िबादते इलाही के लिए ताज़ा की जाती रही है, हर साल इस महीने में इताअ़त और अ़िबादत की नई मश्क़ (ट्रेनिंग) हो जाती है जिस से बाक़ी महीनों के लिए मोमिन का ईमान ताज़ा दम हो जाता है और इसी के साथ-साथ अल्लाह तआ़ला का वह अ़ज़ीम कलाम जो पहाड़ नहीं उठा सकता था, उस को इस के संभालने का फ़रीज़ा इस महीने से फ़ायदा उठाने के लिए आसान हो जाता है और रोज़े के अ़मल से रब्बुल् आ़लमीन का कलाम कलामे अ़ज़ीम और उस की वजह से इस महीने को जो खुसूसियत मिली है उस का ह़क़ अदा करने का मौक़ा मिल जाता है और इस से कामियाबी के साथ फ़ारिग़ होने पर ईद का मुबारक तोह़फ़ा भी ह़ासिल होता है।

# रोजः का महीना

## ख़ैर व बरकत और रूहानी तर्बियत का सालाना निज़ाम

रमज़ानुल् मुबारक का महीना ख़ैर व बरकत का महीना है, ईमान व अ़िबादत का महीना है, मुसलमान को मुसलमान बनकर अपने आ़माल को खुदा की रज़ामन्दी के मुताबिक़ ढ़ालने की कोशिश का महीना है, दौलतमन्द को अपनी दौलतमन्दी के ज़रिये खुदा को राज़ी व खुश करने का और ग़रीब को अपनी ग़रीबी के बावजूद नेक अ़मल करने का महीना है। यह महीना आता है तो माहौल को पुर नूर बना देता है, अहले ईमान में खुशी की लहर दौड़ा देता है, मुसलमानों की सुबह़ व शाम को पुररौनक़ बना देता है, बड़ी उ़म्र के लोग ख़ुलूस के साथ नेकी के पाबन्द होते हैं, छोटी उ़म्र के इस माह की लज़्ज़त इफ़्तारी से लुत्फ़ ह़ासिल करते हैं।

इस की फ़ज्र से पहले की सह़रियाँ इस के गुरूबे शम्स की इफ़्तारियाँ इस की रातों का ज़िक्र व अ़िबादत, इस के दिनों की तिलावत, सब इस माह की रौनक़ को दोबाला बनाती हैं, फिर इन सब बातों पर ह़ासिल होने वाला अज्र हर मोमिन के दिल को ख़ुशी से भर देता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इस पर मख़्सूस अज्र देने का वादा है।

रमज़ान का रोज़ः ह़क़ीक़त में कई क़िस्म के आ़माल का नाम है। इस में मुसलमान को अपने परवरदिग़ार की रज़ा की तलब में अपने नफ़्स को मारना पड़ता है, इस में आख़िरत के अज्र के लिए अपने माल को ख़र्च करने का, अपने परवरदिग़ार की याद को दिल में जगाने के लिए नमाज़ व तिलावत का ख़ास मौक़ा मिलता है, अपनी ज़बान को ख़ूबी और नेकी का पाबन्द बनाने का माह़ौल मिलता है, अपने वक़्त को साफ़ और पाकीज़ह काम के साथ जोड़ने का जज़्बा पैदा होता है और नेक अ़मल की तौफ़ीक़ होती है।



रमज़ानुल् मुबारक में अल्लाह तआ़ला के हुक्म से शैतान जंज़ीरों में क़ैद कर दिये जाते हैं, शैतान जिन का काम बस यह है कि वह इन्सानों को अच्छे कामों से रोकें और बुरे कामों के हरे-भरे बाग़ दिखाएँ इस माह में अपने इस ज़ालिमाना और गन्दे काम से रोक दिये जाते हैं, उस के नतीजे में नेकी करने वालों को नेकी करने में आसानी होती है और बुराई करने वालों को बुराई की तरफ़ मायल होने में इतना आसान नहीं रहता जितना ग़ैर रमज़ान में होता है।

हर इन्सान नफ़्स व नफ़्सियात से भी मिलकर बना है। इन्सान का नफ़्स लज़्ज़त और राह़त तलब होता है उस में तमअ़ या लालच का माद्दह भी होता है और ख़ुदग़र्ज़ी का जज़्बा भी होता है, ज़िन्दग़ी की बहुत सी बुराईयों को अख़्तियार करने में इन्सान का नफ़्स आमादा करता है इस में शैतान की कोशिश पर ही दारोमदार नहीं, शैतान इस में सिर्फ़ बढ़ावा देता और ताक़त पहुँचाता है और मज़ीद बड़ी बुराईयों की तरफ़ मायल करता है और उन में मदद करता है। रमज़ान में जो बुराईयाँ की जाती हैं वह इसलिए कम होती हैं कि वह सिर्फ़ नफ़्स के असर से होती हैं उन को शैतान का सहारा नहीं मिलता।

लेकिन इन्सानी नफ़्स बाज़ इन्सानों में और बाज़ क़ौमों पर इतना ताक़तवर और मोटा हो जाता है कि उस को अपने बुरे कामों के लिए शैतान के सहारे की कोई ख़ास ज़रूरत नहीं होती, यह नफ़्स रमज़ान के महीने में भी अपना काम कर सकता है और करता है, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने रोज़े में यह भी असर रखा है कि वह नफ़्स को कमज़ोर कर दे और उस को उस के बुरे अस्रात से रोके और उस के असर को कम कर दे क्योंकि रोज़ः ह़क़ीक़त में नफ़्स के ख़राब असर को तोड़ने का अ़मल है, इन्सान का पेट जब ख़ाली होता है और प्यास का एह़सास होता है तो बुराईयों की तरफ़ उस का रुझान कमज़ोर पड़ जाता है, इन्सान में भरे पेट के साथ ग़लत क़ामों की तरफ़ जो मैलान होता है वह ख़ाली पेट में नहीं होता।

इसीलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ऐसे शख़्स को जिस को नफ़्सानी ख़्वाहिश ज़्यादह होती हो लेकिन उस के पास शादी करने की माली ताक़त न हो रोज़े रखने की तर्ग़ीब फ़रमाई ताकि वह अपनी ख़्वाहिश पर ग़ालिब आ सके और उस की

वजह से ग़लत काम में पड़े। रोज़े को अल्लाह तआ़ला ने ऐसा बनाया है कि वह नेकियों का रास्ता बनाता है और गुनाहों का रास्ता रोकता है, लेकिन रोज़े के असरात और उस का माहौल उसी वक़्त अपना काम करता है जब रोज़ः को उस के आदाब और उस की मुक़र्रर एह़तियातों के साथ रखा जाए वह ख़ुदा के लिए हो, अपने किसी मक़्सद के लिए न हो, रोज़े में जो बातें मना हैं उन से पूरा परहेज़ हो और रोज़ः की फ़िज़ा को क़ायम करने के लिए जो आ़माल बताये गये हैं वह अपनाए जाएँ।

रोज़ः यूँ ज़ाहिर में फ़ज्र के वक़्त से ग़ुरूब आफ़्ताब तक खाने-पीने और बीवी के ख़ास अ़मल से बचने का नाम है लेकिन उस के साथ साथ झूठ से, ग़ीबत से और ज़बान व हाथ के दूसरे गुनाहों से पूरा परहेज़ करने का नाम भी है। ह़दीस शरीफ़ में आया है कि किसी ने रोज़ः रखा और खाने से परहेज़ किया लेकिन ग़ीबत, झूठ जैसे कामों से परहेज़ नहीं किया तो इस की क्या ज़रूरत थी कि वह भूखा प्यासा रहे? इस का मतलब यह हुआ कि ऐसे शख़्स का रोज़ः बेकार हो गया। इसीलिए बाज़ आइम्मा के यहाँ झूठ बोलने और ग़ीबत करने से भी रोज़ः टूट जाता है, लेकिन सब आइम्मा के नज़्दीक ऐसा नहीं है वह कहते हैं कि रोज़ः का ज़ाहिरी अ़मल तो अन्जाम पा जाता है क्योंकि अस्ल शर्त पूरी हो गई लेकिन इस का सवाब जाता रहा क्योंकि उस के आदाब का लिहाज़ नहीं किया।

## नेकियों का मौसम-

रोज़ः को अल्लाह तआ़ला ने नेकियों का मौसम बनाया है जितनी नेकी करने की सूरतें इस में बनती हैं दूसरे आ़माल में मुश्किल से बनती हैं। इस में तो रोज़ः ही एक बड़ा अ़मल है फिर इस में नमाज़ें हैं, तिलावते क़ुर्आन मजीद है, ग़रीबों की मदद है और बिला क़ैद हर वक़्त खाने-पीने से रोक है और मुजाहिद की कैफ़ियत अपनाने का मौक़ा है।

फिर इस में नेकी करने का सवाब सत्तर गुना कर दिया गया है, ग़ैर रमज़ान में की जाने वाली एक नेकी और रमज़ान में की जाने वाली एक नेकी के सवाब में एक और सत्तर का फ़र्क़ है।



फिर रमज़ान में रोज़े रखना चूंकि तमाम मुसलमानों पर एक ही वक़्त में ज़रूरी किया गया है इसलिए मुसलमानों के समाज में इस पूरी मुद्दत में हर तरफ़ एक ही फ़िज़ा बन जाती है और वह फ़िज़ा नेकी की, हमदर्दी की, नर्मी की की और आख़िरत तल्बी की एह़तियात व अ़िबादत की होती है।

इसीलिए रमज़ान में उन लोगों को जिन को बीमारी या सफ़र के उ़ज़्र की वजह से रोज़ः मुवख़्ख़र करने की इजाज़त दी गई है उन को भी यह मना है कि वह बरसरे आ़म ख़ाएँ। उन को हुक्म है कि वह सब से अलग जगह ऐसा करें, ताकि रोज़ः की फ़िज़ा मुतास्सिर न हो।

रमज़ान दरअसल नफ़्स को क़ाबू करने और उस की बुरी ताक़त को कमज़ोर करने का एक सालाना तर्बियती निज़ाम है, इस निज़ाम से हर मुसलमान को साल में एक मर्तबः गुज़रना पड़ता है। ज़रूरत है कि जिस तरह़ हम ज़िन्दगी की ज़रूरियात के लिए किसी भी सालाना तर्बियती कैम्प या तर्बियत गाह में वक़्त तवज्जोह व अ़मल के साथ गुज़ारते हैं रमज़ान के इस निज़ाम में भी उस के आदाब और अह़काम के मुताबिक़ वक़्त गुज़ारा करें ताकि हम इस सालाना तर्बियतगाह से पूरी तरह़ कामियाब होकर एक सालेह़ और सच्चे मुसलमान बनकर निकला करें।

रोज़ः का फ़ायदा और अल्लाह के नज़्दीक इस के अहमियत की यह बड़ी दलील है कि अल्लाह ने दूसरे अ़मल के मुक़ाबिले में इस से अपनी पसन्द ज़्यादह ज़ाहिर की है। ह़दीस शरीफ़ में अल्लाह तआ़ला का यह इर्शाद बताया गया है कि:-

”عن أبی هريرة قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم كل عمل ابن آدم يضاعف الحسنة بعشر أمثالها الیٰ سبع مأة ضعف قال الله تعالیٰ الا الصوم فانه لی وانا اجزی به يدع شهوته وطعامه من أجلی“(رواه البخاری ومسلم)

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने (रोजः की फ़ज़ीलत और क़द्रो क़ीमत बयान करते हुए) इर्शाद फ़रमाया कि आदमी के हर

अच्छे अ़मल का सवाब दस गुने से सात सौ गुने तक बढ़ाया जाता है, मगर अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है किः रोज़ः उस आ़म क़ानून से अलग और बालातर है, वह बन्दा की तरफ़ से ख़ास मेरे लिए एक तोह़फ़ा है और मैं ही (जिस तरह़ चाहूँगा) उस का अज्र व सवाब दूँगा। मेरा बन्दा मेरी रज़ा के वास्ते अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स और अपना खाना-पीना छोड़ देता है (बस मैं ख़ुद ही अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ उस की इस क़ुर्बानी का बदला दूँगा।

अल्लाह तआ़ला हम सब को रमज़ान और उस के रोज़ों के क़द्र की तौफ़ीक़ दे। **आमीन।**



# रमज़ानुल् मुबारक

## मुसलमानों की एक बड़ी दीनी दौलत

माहे रमज़ान मुसलमानों की ऐसी दीनी दौलत है जिस से उन को मुख़्तलिफ़ फ़ायदे ह़ासिल होते हैं, अ़िबादत की अदायगी के साथ-साथ मुसलमानों की इज्तिमाई (सामूहिक) ज़िन्दग़ी के बहुत से ग़ोशे इस्लाह़ व दुरुस्तग़ी के अ़मल से गुज़रते हैं, आपस की हमदर्दी ग़मख़्वारी, तआ़वुन और इन्सानी एह़सासात की सह़ीह़ कार फ़रमाई का यह बेहतरीन मौक़ा होता है चुनांचे रमज़ान के ज़माने को सह़ीह़ तरीक़े से गुज़ारने के बाद एक मुसलमान अ़िबादत की शानदार अदाएगी के साथ ग़फ़्लतों और सख़्त मिज़ाजी की कैफ़ियत से पाक होकर निकल सकता है।

रोज़ेदार को एक माह तक उन तमाम बातों से परहेज़ करना होता है जो इन्सान के नफ़्स को मोटा और उस की तबीअ़त को अच्छे इन्सानी अख़्लाक़ से जुदा करती हैं, उस को एक तरफ़ अपने परवरदिग़ार के सामने बन्दग़ी की ज़िम्मेदारियों को अन्जाम देने का मौक़ा मिलता है तो दूसरी तरफ़ अपनी इन्सानी बिरादरी के साथ हमदर्दी और दिलदारी के हुक़ूक़ भी अदा करने होते हैं, बन्दग़ी के इज़्हार में अ़मल अ़िबादत के साथ अपने परवरदिग़ार के हुक्म के सामने अपनी राह़त और अपनी मर्ज़ी को क़ुर्बान करना होता है, इस क़ुर्बानी में नफ़्स की क़ुर्बानी भी होती है और बदनी राह़त की भी क़ुर्बानी होती है, उस के अख़्तियार किये हुए मअ़मूलात में फ़र्क़ ले आया जाता है, खाने-पीने के वक़्तों को बढ़ा दिया जाता है और उन के वक़्तों में भी तब्दीली कर दी जाती है, वह जिस वक़्त खाना खाता था उस वक़्त उस को रोक दिया जाता है और जिस वक़्त वह आ़मतौर से नहीं खाता था उस वक़्त उस को खाने का वक़्त बताया जाता है, उस के लिए तुलूअ़ फ़ज्र से पहले जब कि उस के बेदार होने से कम से कम घंटे दो घंटे पहले का वक़्त होता है उठ कर खाना खाना बता दिया जाता है और जब वह दिन के

अवक़ात में अपनी राह़त के मुताबिक़ खाना खाया करता है उन अवक़ात में उसको मना कर दिया जाता है, फिर सूरज ग़ुरूब होते ही उस को खाने की सिर्फ़ इजाज़त ही नहीं मिलती बल्कि उस वक़्त उस के लिए यह काम अज्र व सवाब का काम क़रार दिया जाता है, फिर यह सिल्सिला पूरे एक माह तक चलता है, इस सिल्सिले में खाने के अ़लावह पानी-पीने को भी शामिल किया जाता है। इस तरह़ रोज़ेदार को अपने परवरदिग़ार के हुक्म पर भूका प्यासा रहना होता है और फिर उसी के हुक्म से खाना-पीना अख़्तियार करना होता है, रोज़े की यह पाबन्दियाँ एक ख़ास क़िस्म की पाबन्दियाँ हैं।

दूसरे मज़ाहिब में इतनी सब चीज़ें एक ही वक़्त में नहीं मिलती। फिर इस्लाम में इस तरह़ की पाबन्दियों को सिर्फ़ खाने-पीने तक ही नहीं रखा गया बल्कि उन के दायरे को आपस की हमदर्दी भाईचारा और ज़रूरतमन्दों की माद्दी (आर्थिक) मदद तक फैला दिया गया है, भूक प्यास के दायरे से ऊपर ख़्वाहिशे नफ़्स व नफ़्सानियत के दायरे तक फैला दिया गया है, दूसरे की बुराईयों और कमज़ोरियों का ज़िक्र, झूठ और ग़लत बात का मुँह से निकालना, नफ़्सानियत के काम करना बहुत बुरे अ़मल क़रार दिये गये हैं उसी के साथ-साथ ज़रूरतमन्दों की ज़रूरत की फ़िक्र करना, भूकों को खाना खिलाना और अपने माल को दूसरे की मदद में ख़र्च करना यह वह अच्छे काम हैं जिन की इस महीने में बहुत ताकीद की गई है।

रोज़ों को ज़ाहिरी तौर पर देखने में तो यही नज़र आता है कि यह सिर्फ़ खाने-पीने में चन्द रुकावटों पर अ़मल करने का काम है, लेकिन यह ह़क़ीक़त चन्द दर चन्द रुकावटों पर अ़मल करने का काम है जिन में नफ़्स को मारना इन्सानी हमदर्दी और भाईचारा दाख़िल है।

रमज़ानुल् मुबारक का यह महीना ह़क़ीक़त में परवरदिग़ार के सामने बन्दग़ी का एक ख़ास सिल्सिला है जो ग्यारह महीनों के बाद हर साल आता है इस में रखे जाने वाले रोज़ों में एक मुसलमान अपने परवरदिग़ार की मर्ज़ी के ह़ुसूल के लिए अपनी ज़िन्दग़ी को गहरी ताबेअ़दारी (फ़रमाँबरदारी) में ढ़ालतें हैं, इस की अहमियत व अ़ज़्मत का अन्दाज़ा इस बात से किया जा सकता है कि परवरदिग़ार



ने इस अ़मल का बदला ख़ासतौर पर अपनी तरफ़ से देना रखा है जो आ़म क़ायदों से हटकर दी जाएगी, रोज़ों के इस महीने की बरकत व अ़ज़्मत इस से भी ज़ाहिर होती है कि इस में बड़े शयातीन क़ैद कर दिये जाते हैं और बन्दों को उन के शर से मह़फ़ूज़ कर दिया जाता है। इस महीने को रोज़ों के अ़लावह कई अहम इस्लामी खुसूसियात व मवाक़े के साथ वाबस्ता भी किया गया है, इस माह में कुर्आन मजीद नाज़िल हुआ जो आख़िरी और जामेअ़ तरीन किताब हिदायत है।

कुर्आन मजीद का इसी माह के साथ ख़ास तअ़ल्लुक़ है, खुद अल्लाह तआ़ला ने इस माह की यह अ़ज़ीम खुसूसियात बताई हैं कि इस में कुर्आन मजीद नाज़िल हुआ

शَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيٓ أُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ ۚ कि रमज़ान का यह महीना ऐसा है कि इस में कुर्आन मजीद नाज़िल किया गया जो लोगों के लिए भलाई की तरफ़ रहनुमाई करने वाला है और (इस में) हिदायत की रौशन बातें हैं और ह़क़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ करने वाला है।

कुर्आन मजीद शुरु से आख़िर तक का एक-एक अक्षर परवरदिग़ार के शब्द है, इन्सानों को यह कलाम सुनने और ज़बान से इस को अदा करने की सआ़दत ऐसी सआ़दत है कि कोई दूसरी सआ़दत मुश्किल से उस के बराबर हो सकती होगी। इस सआ़दत की यह अ़लामत है कि इस के हर ह़र्फ़ (अक्षर) को मुँह से अदा करने पर दस नेकियाँ ह़ासिल हो सकती है, फिर सिर्फ़ यही नहीं कि मुसलमान अ़ज़ीम अल्फ़ाज़ को अपनी ज़बानों से अदा करते हैं बल्कि इन शब्दों के ज़रिये दिलों और दिमाग़ों को आ़ला ग़िज़ा भी फ़राहम की गई है। फ़रमाया कि "فيه هدىً و شفاء" इस कलाम-ए-इलाही में अच्छी बातों की रहनुमाई और सेह़त बख़्श चीज़ें हैं।

# ज़मीनी मख़्लूक़- आसमानी अ़मल

रोज़ः एक अ़िबादत है जिस में कई तरह़ की अ़िबादतें जमा हो जाती हैं, इस में एक वक़्त में कई अ़िबादतें अन्जाम पाती हैं। वह ऐसी रूह़ानी ह़ालत पैदा कर देता है जिस में यह ज़मीनी व माद्दी कैफ़ियत दूर होने लगती है और रूह़ानी व नूरानी कैफ़ियत छा जाती है।

रोज़ः इस तरह़ रखा गया है कि इस में फ़रिश्तों जैसी ज़िन्दगी उभरती है, फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला की वह मख़्लूक़ हैं जो न खाते हैं, न पीते हैं और न उन को ज़मीनी मख़्लूक़ात की तरह़ ज़मीनी ज़रूरियात पेश आती हैं, वह हर वक़्त अल्लाह तआ़ला से लौ लगाए उसी की अ़िबादत व इताअ़त में लगे रहते हैं, न थकते हैं और न नाफ़रमानी करते हैं, रोज़ेदार की ज़िन्दगी मुम्किन ह़द तक ऐसी ही ज़िन्दगी बन जाती है।

ज़मीनी मख़्लूक़ होने की वजह से इस को ज़रूरी इन्सानी ज़रूरतें तो पूरी ही करनी होती हैं, लेकिन दूसरे मुम्किन और अख़्तियारी मामलात में रोज़ेदार फ़रिश्तों की तरह़ अ़िबादात व इताअ़त में लगा रहता है, न खाता है न पीता है और न कोई नाफ़रमानी करता है।

रोज़ेदार इस तरह़ की ज़िन्दगी अख़्तियार करने में कामियाब और मक़्बूल रोज़ेदार साबित होता है और इस में कोताही करने में कोताही के बराबर रोज़े के फ़ायदे से मह़रूम हो जाता है।

रोज़ों का यह ज़माना चूंकि सब मुसलमानों के लिए एक ही वक़्त में आता है इसलिए एक उ़मूमी मन्ज़र और माह़ौल बन जाता है और ऐसा माह़ौल बनाने की ताकीद भी आई है यहाँ तक कि बीमारी या सफ़र की वजह से रोज़ः न रख सकने वाले को भी ताकीद है कि वह एलान कर के अपने रोज़े न रखने का मुज़ाहिरा न करे ताकि रोज़ः की फ़िज़ा पर उस का असर न हो।

मुसलमानों को अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लेना चाहिए कि ऐसे ज़माने में



जो रूह़ानी और फ़रिश्तों की तरह़ ज़िन्दगी का इज़्हार करने के लिए उन को दिया गया है, उस से वह कहाँ तक दूर होते जा रहे हैं और अगर उन से कुछ कोताही होती है तो उस को दूर करने की क्या कोशिश करते हैं? वह अपनी पूरी ज़िन्दगी में फ़रिश्ते नहीं बन सकते तो क्या उन को जो थोड़ा सा मौक़ा इस बात का मुज़ाहिरा करने के लिए दिया गया है कि इस से वह अपनी ताक़त भर फ़ायदा भी नहीं उठा सकते और अपने परवरदिग़ार की रह़मतों और रज़ामन्दियों से मालामाल नहीं हो सकते?

हमारी आ़म ज़िन्दगी तो दीनी कमज़ोरियों और अ़मली कोताहियों से भरी रहती है, दुनियावी राह़तों और लज़्ज़तों की फ़िक्र, दुनियावी फ़ायदे के ह़ासिल करने की फ़िक्र, हर वक़्त नफ़्स के ख़्वाहिशात की फ़िक्र, अपने शौक़ व ख़्वाहिश के असर से दूसरों के साथ ज़्यादती व ह़क़तल्फ़ी, किसी की ग़ीबत, कहीं झूठ, किसी के साथ ज़्यादती, किसी की ह़क़तल्फ़ी, हमारी ज़िन्दगी लगभग इन बातों से दाग़दार रहती है, साल भर में सिर्फ़ एक महीना हम को दिया गया है कि हम उन तमाम बुरी और नामुनासिब बातों से परहेज़ की मश्क़ (ट्रेनिंग) करें और कोशिश करें कि हमारी ज़िन्दगी इन सब बातों से जितना मुम्किन हो पाक हो, अगर इस में कामियाब होते हैं तो यह फ़रिश्तों के कारनामे से बड़ा कारनामा होगा, क्योंकि फ़रिश्ते ऐसा करने पर फ़ित्री तौर पर मजबूर हैं, लेकिन हम ज़मीनी मख़्लूक़ होने की वजह से फ़ित्री तौर पर मजबूर नहीं हैं हम अपने इरादा और फ़िक्रमन्दी से इस को अख़्तियार करेंगे, फ़रिश्तों को ऐसी ह़ालत के लिए क़ुर्बानी नहीं करनी पड़ी, हम मेह़नत व क़ुर्बानी से इस को अख़्तियार कर सकेंगे, इसलिए इन्सान अगर फ़रिश्तों जैसी ह़ालत अख़्यिार करे तो उस का रुत्बा फ़रिश्तों से बढ़ जाता है।

## नेअ़मत का महीना-

रमज़ान का महीना एक अ़जीब नेअ़मत का महीना है, ज़मीनी मख़्लूक़ को कुछ वक़्त के लिए आसमानी मख़्लूक़ बना देने वाला महीना है। ऐसी ग़ैर मामूली नेअ़मत मिलने पर उस की क़द्र न हो तो बड़ी मह़रूमी की बात है।

ह़दीस शरीफ़ में आया है कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मेम्बर पर

चढ़ते हुए तीन शख़्सों के लिए महरूमी व बर्बादी की बद्दुआ़ पर आमीन कही, उन में से एक वह शख़्स था जिस को रमज़ान का मौक़ा मिले और वह उस का हक़ अदा कर के अपनी बख़्शिश न करा सके और रमज़ान की क़द्र करने वाले के लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आदमी के हर अ़मल की जज़ा तो वैसी ही होगी जैसी यहाँ की गई है सिवाय रोजः के कि वह मेरे साथ ख़ास है, मैं उस की जज़ा (बदला) ख़ुद अपने से दूँगा।

रमज़ानुल् मुबारक तीन अ़शरों (दहाई) का होता है। पहला अ़शरा (दहाई) रह़मत का, दूसरा मग़्फ़िरत का, तीसरा आग से आज़ादी का, रोज़ेदार रमज़ान शुरु होते ही इस में नाज़िल होने वाली रह़मतों से फ़ायदा उठाते हैं, अगर इस में फ़ायदा न उठा सका तो अगले अ़शरे में अपने परवरदिग़ार से माफ़ी व मग़्फ़िरत को ह़ासिल कर लेता है और यह भी पूरी तरह़ न हो सका तो तीसरा अ़शरा आग से छुट्कारे का मिलता है। इस में वह चीज़ें रखी गयी हैं जिन के सहारे अपने को अ़ज़ाब से तो मह़फ़ूज़ करवा लेता है।

आख़िरी अ़शरा अहम तरीन अ़शरा है इस में पाँच रातें शबे क़द्र की तलाश के लिए रखी गई हैं, इन पाँच रातों में से एक रात ऐसी है जो अपने अज्र व सवाब, रह़मत व बरकत और नूरानियत के लिहाज़ से एक हज़ार रातों से भी अफ़्ज़ल बताई गई है इस रात में अ़िबादत और रज़ा-ए-इलाही के कामों का रुत्बा एक हज़ार रातों से ज़्यादा की क़ीमत रखता है, इस रात में फ़रिश्तों और रह़मते इलाही का अ़ज़ीमुश्शान नुज़ूल होता है और इस नूरानी नुज़ूल से जो भी ज़रा तवज्जोह करे बाआसानी फ़ायदा उठा सकता है।

रमज़ान के महीने का आना मुसलमान के लिए एक बहुत बड़ा मौक़ा है जिस में वह अपने गुनाहों और कोताहियों को धोकर अपने को रूह़ानी तौर पर पाक व साफ़ कर सकता है और रह़मतों और बरकतों के ज़ख़ीरे जमा कर सकता है। इस में इस का भी मौक़ा है कि अगर शुरु में पूरी तवज्जोह न हो सकी हो तो दर्मियान और आख़िर में मौक़ा है और दर्मियान में भी कोताही हो गई तो आख़िरी अ़शरह बेहतरीन और आख़िरी मौक़ा है इस से ग़फ़्लत बरतने और कोताही करने की गुन्जाईश नहीं।



हम को आख़िरी अ़श्रे का इस्तिक़बाल पूरी तवज्जोह से करना चाहिए और उस की रूह़ानी नेअ़मतों और बरकतों से अपने आप को मालामाल करने की कोशिश करना चाहिए और रमज़ान शुरु होने पर रूह़ानी आवाज़ लगाने वाले की आवाज़ पर लब्बैक कहना चाहिए कि:-

“ويا باغى الخير أقبل يا باغى الشر أقصر”

(कि ऐ नेकी के तालिब आगे आ और ऐ बदी के तालिब पीछे जा।)

# तरावीह़ और रमज़ान

## *कुर्आन मजीद की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) का अहम ज़रिया*

कुर्आन मजीद एक तरफ़ तो इन्सानी रहनुमाई के लिए मोअ़जिज़ा (चमत्कारिक किताब) है। दूसरे इस का पढ़ना सवाब भी। अल्लाह तआला के इस कलाम "कुर्आन मजीद" का रमज़ानुल् मुबारक से खास सम्बन्ध है। इसी मुबारक महीनें में यह नाज़िल हुआ, जिस की विशेषता इस तौर पर ज़िक्र फरमाई गई है।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ ۚ

**अनुवाद-** "रमज़ान का महीना वह है, जिसमें कुर्आन उतारा गया, जो इन्सानों के लिए हिदायत (रहनुमा) है; और जिसमें हिदायत (रहनुमाई) और ह़क़ व बातिल (सत्य-असत्य) में अन्तर करने के प्रमाण हैं"।

और रमज़ान के महीने का सम्बन्ध भी कुर्आन से है, जो इस मुबारक महीने में खूब पढ़ा जाता है। अल्लाह तआला की तरफ से इस के पढ़े जाने का इन्तिज़ाम भी है खास तौर पर नमाज़ों में और तरावीह़ की नमाज़ तो शायद इसी लिए रखी गई है। यह परवरदिगार का कलाम (वाणी) है, इस लिए इसका पढ़ना भी अ़िबादत है। तरावीह़ को अल्लाह तआ़ला ने कुर्आन मजीद की ह़िफ़ाज़त का एक बड़ा ज़रिया बनाया है, जिस की वजह से कुर्आन से सम्बन्ध बहुत बढ़ जाता है। अगर तरावीह़ न होती तो कुर्आन पर तवज्जोह रमज़ान में इतनी ज़्यादा न होती। तरावीह़ ही का नतीजा है कि पूरी दुनिया में हज़ारों, लाखों, हाफिज़ लोग कुर्आन सुनाते है, जो कुर्आन पाक की हिफ़ाज़त का बेहतरीन इन्तिज़ाम है।

रमज़ानुल् मुबारक में तरावीह़ का अ़मल एक मुफीद और दीनी कुव्वत का बेहतरीन ज़रिया है, इस का कुर्आन मजीद से बहुत गहरा तअ़ल्लुक है। इस में कुर्आन मजीद के सुनने और सुनाने का ऐसा मौक़ा मिलता है जिस से सुनने और सुनाने वाले दोनों ही बड़ा फ़ायदा उठाते हैं और कलामे इलाही को सुनने और



सुनाने में अल्लाह को राज़ी करने का मौक़ा मिलता है, जो दीनी तरक्की और कुबूलियत का क़ीमती ज़रिया है। इसी के साथ इस अ़मल से कुर्आन मजीद की ह़िफ़ाज़त के अ़मल को बड़ी ताक़त मिलती है और ईमान वालों को इस से मज़बूती हासिल होती है, जिस की हिफाज़त का खुद अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन ने वादा फरमाया है:-

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝

**अनुवाद-** बेशक 'हम' ही ने नसीह़त-नामा उतारा है और 'हम' ही इसके निगहबान (संरक्षक) हैं।

मस्ला के हिसाब से तरावीह़ एक सुन्नत है जो जमाअ़त के साथ होती है और रमज़ान की खुसूसियत में दाखिल है, जिस की बड़ी अहमियत है। दीन में इस की अहमियत और ह़क़ीक़त पर 'ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल् ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी' (रह०) ने "अरकान-ए अर बअ़" में जो लिखा है वह इस के बहुत से पहलुओं पर रोशनी डालता है। वह लिखते हैं:-

"अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत में तरावीह़ की ह़िफ़ाज़त और इस के एहतिमाम का जज़्बा भी पैदा फरमाया है। तरावीह़ की नमाज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से साबित है, लेकिन आप (सल्ल०) ने तीन दिन पढ़ कर इस को इस लिए छोड़ दिया था कि कहीं यह उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाए जिससे उम्मत के लिए कष्ट का ज़रिया हो।

'इब्ने शिहाब' (रह०) (ज़ुहरी) रिवायत करते है मुझ से उरवह (रह०) (इब्ने अल् ज़ुबैर) ने बताया, वह कहते हैं मुझे 'ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' ने खबर दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक बार रात में अपने घर से निकले और मस्जिद में नमाज़ पढ़ी और आप के साथ और कुछ लोगों ने भी नमाज़ पढ़ी। जब सुबह हुई तो लोगों ने उस के विषय में चर्चा की तो बहुत से लोग जमा हो गए। दूसरे रोज़ जब आप ने नमाज़ पढ़ी तो सब ने आप के साथ नमाज़ पढ़ी, फिर सुबह हुई तो फिर चर्चा हुई। अब तीसरी रात नमाज़ियों की संख्या और बढ़ गई।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ लाए और नमाज़

पढ़ी तो सब ने आप के साथ नमाज़ अदा की, जब चौथी रात आई तो नमाज़ियों के बढ़ने की वजह से मस्जिद में जगह न रही, यहाँ तक कि फज्र की नमाज़ के लिए आप (सल्ल०) बाहर तशरीफ लाए और नमाज़ पढ़ने के बाद लोगों की तरफ आप (सल्ल०) मुतवज्जेह हुए और फरमाया कि तुम लोगों की मौजूदगी मुझ से छुपी हुई नही थी, लेकिन मुझे डर हुआ कि यह नमाज़ तुम पर फ़र्ज़ न कर दी जाए कि तुम इस से परेशान हो जाओ, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई और यही सूरत रही।

**(सहीह़ बुख़ारी, बाबु फज़्ल मन क़ामा रमज़ान)**

आप (सल्ल०) के बाद सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम इस पर अ़मल करते रहे। इस उम्मत ने मुख्तलिफ़ मुल्कों और मुख्तलिफ़ ज़मानों में इस की पूरी हिफाज़त की, यहाँ तक कि तरावीह़ की नमाज़ तमाम अहले सुन्नत और नेक लोगों की निशानी बन गई। इस के अलावा इस से हिफ्ज़ क़ुर्आन में भी बड़ी मदद मिली। इस सिलसिले में बाज़ उन देशों के साथ जो इस्लामी केन्द्र (मक्का) से बहुत दूर थे, अल्लाह तआ़ला का खास फज़्ल रहा। चुनाँचे हिन्दुस्तान व पाकिस्तान में तरावीह़ और ख़त्म क़ुर्आन का जितना एहतिमाम है और अवाम व ख़वास सब इस पर दिलचस्पी से अमल करते हैं, यह बात इस दर्जे में किसी और मुल्क में नहीं पाई जाती, यहाँ मुहल्ले की छोटी-छोटी मस्जिदों में भी तरावीह़ का एहतिमाम किया जाता है और कम से कम एक खत्म ज़रूर होता है, बड़ी और खास मुस्जिदों में कई-कई खत्म होते हैं और इस में कोई शक नहीं कि इस सुन्नत की वजह से हिफाज़त में बहुत नुमायाँ इज़ाफा हुआ और रमज़ान के लिए पूरे साल क़ुर्आन मजीद के दौर का मामूल बन गया और ऐसे ह़ाफिज़ पैदा हुए जो ह़ैरत अंगेज़ कमालात रखते थे और ह़िफ़ाज़त-ए-क़ुर्आन के शोअ़बे में गैर मामूली और मुम्ताज़ (विशेष) ह़ैसियत के मालिक थे।

**(अरकान-ए-अरबअ़/268,269 ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली नदवी रह०)**

ह़ज़रत शेखुल हदीस मौलाना मुह़म्मद ज़करिया काँधलवी (रह०) ने फ़ज़ाइले रमज़ान में बैहक़ी और इब्ने खुज़ैमा के हवाले से ह़ज़रत सल्मान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफूअ़न नक़्ल किया है कि आखिर शाबान में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सह़ाबा (रज़ि) को ख़िताब फरमाया और कहा किः-



तुम्हारे ऊपर एक महीना आ रहा है जो बहुत अज़ीम बरकत वाला महीना है, इस में एक रात है शबे क़द्र, जो हज़ार महीनों से बढ़ कर है। अल्लाह तआला ने इस के रोज़े को फर्ज़ फरमाया और इस के रात के क़याम यानी तरावीह़ को सवाब की चीज़ बनाया।

तरावीह़ के सिलसिले में उम्मत का जो अ़मल रहा है और इस का जो एहतिमाम किया है, इस की अपनी खुसूसियत मालूम होती है कि इस का एहतिमाम रात के शुरू हिस्से में अ़िशा की नमाज़ के साथ किया गया और तहज्जुद का एहतिमाम आखिर रात में। तरावीह़ की नमाज़ जमाअ़त से 'हज़रत उमर बिन खत्ताब' (रज़ि०) ने बीस रकअ़ात फुक्हा-ए-सह़ाबा के मश्वरे और इत्तिफ़ाक़ से मुकर्रर की और 'हज़रत उबई बिन कअ़ब' (रज़ि०) जैसे जलीलुल क़द्र सह़ाबी से इमामत कराई और उन्होंने इस में क़ुर्आन मजीद सुनाया। इस तरह सह़ाबा (रज़ि०) ने अ़मली तौर पर पूरा इत्तिफ़ाक़ ज़ाहिर किया और इस की वजह से यह सुन्नत हर तरफ आम हो गई और यह सआ़दत 'हज़रत उमर' (रज़ि०) के हिस्से में आई कि इस अज़ीम सुन्नत का आख़िर, उन के ज़रिया हुआ और क़ुर्आन मजीद ज़्यादा पढ़ने का भी यह ज़रिया बनी और हिफाज़त के लिये बड़ी मुबारक साबित हुई कि इस की वजह से लोग क़ुर्आन मजीद को अपने सीने में मह़फूज़ रखते हैं, सह़ाबा के बाद ताबईन और फिर तबअ़ ताबईन और दूसरे आइमा व मुहद्दिसीन, उ़लमा व फुक्हा और दीन पर अ़मल करने वालों ने इस का एहतिमाम किया और हरमैन शरीफ़ैन (मक्का-मदीना) में भी उस वक्त से लगातार तरावीह़ पढ़ी जाती है।

क़ुर्आन मजीद मुकम्मल किये जाने का अ़मल जारी है और क़ुर्आन मजीद मुकम्मल होने के बाद भी यह तरीक़ा बरकरार रहता है।

इस तरह यह दो अलग अलग सुन्नतें भी हुईं। तरावीह़ में पूरा क़ुर्आन मजीद सुना जाए और पूरे माह मुबारक तरावीह़ पढ़ी जाए, अगरचे (यद्यपि) तरावीह़ की जमाअ़त सुन्नत किफ़ाया है, लेकिन इतनी अहम सुन्नत है कि 'शेख़ अब्दुल ह़क़ मुहद्दिस देहलवी' (रह०) ने "मा सबत बिस्सुन्नः" में तह़रीर फरमाया है किः-

“अगर किसी शहर के लोग तरावीह़ छोड़ दें तो इस के छोड़ने पर इमाम उन से मुकात्ला करे” तरावीह़ और इस की जमाअ़त ने वह खुसूसियत हासिल की कि यह अहले सुन्नत वल्-जमाअ़त का शआ़र बन गई, चुनाँचे रवाफ़िज़ (शिया ह़ज़रात) इस से जान बचाते है। शायद यही वजह है कि रवाफ़िज़ को आम तौर पर कुर्आन मजीद याद नहीं होता क्योंकि तरावीह़ की खुसूसी ताकीद हज़रत उमर (रज़ि०) के हवाले से मिलती है, इसलिए (शिया) इस से दिल्चस्मी नहीं रखते, लिहाज़ा वह इस के फैज़ से मह़रूम हैं।

हज़रत उमर (रज़ि०) ने और दूसरे तमाम सहा़बा ने मिल कर इस पर अ़मल किया, इस के मुबारक और अ़ज़ीम होने के लिये केवल यही काफ़ी है। सह़ीह़ हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः-

"فانه من يعش منكم فيسرى اختلافا كثيرا فعليكم بسنتي وسنة الخلفاء الراشدين المهديين عضوا عليها بالنواجذ". [ أبو داؤد والترمذى عن العرباض بن سارية ]

इसलिए तरावीह़ और तहज्जुद का मामूल जो रमज़ान की रातों में रहा है, वह इसी मुबारक रात की ख़ासियत है। रमज़ान के बाद तहज्जुद की सुन्नत, इसी तरह पूरे साल बाक़ी रहती है और यही वह अज़ीम सुन्नत है जिस का एहतिमाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सफ़र व हज़र दोनों में किया है और जब इस में कभी किसी वजह से कमी रह गई तो सुबह़ इस कमी को पूरा फरमाया। आप ने इस का हुक्म नहीं दिया कि उम्मत दुश्वारी में पड़े, लेकिन शौक़ दिलाया और इस की फ़ज़ीलत बयान की, चुनाँचे तहज्जुद सालिह़ीन (नेक लोगों का शिआ़र) बन गई मगर यह तन्हा पढ़ी जानी बेहतर है।

# रोज़ः और उस का तोह़फ़ा- ईद

रमज़ानुल् मुबारक का महीना साल भर की आ़म ज़िन्दगी में एक हलचल पैदा कर देने वाला महीना है। इस में एक मुसलमान को अपने आ़म तौर व तरीक़ को बदल कर अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत व फ़रमाँबरदारी और उस की रज़ा का ख़ास एहतिमाम करना होता है। रोज़ाना का निज़ाम, अ़िबादत इलाही में चुस्ती के साथ चन्द पाबन्दियों के साथ चलाना होता है, फिर इस के नतीजे में परवरदिग़ार की ख़ुशनूदी ह़ासिल होती है उस की एक फ़ौरी अ़लामत ईद का इन्आ़म है।

यह ईद, ईदुल् फ़ित्र कही जाती है। यह रोज़ः की पाबन्दी ख़त्म होने की ईद है, इस से पहले रोज़ः की पाबन्दी थी जो ख़त्म हुई, लेकिन यह पाबन्दी सज़ा न थी बल्कि दीनी तरक़्क़ी के लिए एक ख़ास निज़ाम को अन्जाम देना था, जिस को अन्जाम दे देना कामियाबी की और फ़ायदे की बात थी जिस पर खुश होना फ़ित्री अ़मल है, यही ख़ुशी ईद की शक्ल में अ़दा की जाती है, यह ईद ख़ुशी लाती है और इसी के साथ दीनी कामियाबी और एह़सास पैदा करती है और गुज़रे हुए महीने पर नज़र डालने का मौक़ा देती है कि अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से वह ख़ास अ़िबादत पूरा करने की सआ़दत ह़ासिल हुई जो अल्लाह तआ़ला की ख़ास रज़ामन्दी का ज़रिया और इस्लाम की अहम अ़िबादत है, जिस में कई तरह़ के इताअ़त व फ़रमाँबरदारी के अन्दाज़ पाये जाते हैं।

रोजः इस्लाम के पाँच बुनियादी अरकान में से एक रुक्न है। यह बुनियादी अरकान इस्लाम के वह सुतून हैं जिन पर दीने इस्लाम की इमारत क़ायम है उन में से हर सुतून (स्तम्भ) की ह़िफ़ाज़त ज़रूरी है ताकि दीने इस्लाम की इमारत क़ायम रहे, इस्लाम के एक बुनियादी रुक्न होने के साथ रोज़ः की जो ख़ुसूसियात और फ़ायदे हैं उन पर इन्सान ग़ौर करे तो उस को इस में अपनी ज़िन्दगी के लिए रौशन पहलू नज़र आएँगे, आला इन्सानियत के लिए अपनी नफ़सानी



ख़्वाहिशात को दबाने और अपनी ग़र्ज़ को नज़र अन्दाज़ कर के अपने परवरदिग़ार के हुक्मों की बजा आवरी उस के अहम पहलू हैं, रोज़े के ज़रिये इन्सान एक तरफ़ अन्दुरूनी ख़ूबियों से आरास्ता होने की कोशिश करता है और दूसरी तरफ़ दूसरों के दुःख व परेशानी को अपने तजुर्बे में लाकर अपने अन्दर हमदर्दी और रह़मदिली के एह़सास को जगा देता है।

वह सुबह़ को नमूदार होने से पहले अपने राह़त के बिस्तर से उठकर उस वक़्त कुछ खाता पीता है जिस वक़्त बिस्तर की राह़त छोड़कर खाना पीना उस को भारी मालूम होता है, फिर नाश्ता के वक़्त बिला नाश्ता के और दोपहर को खाने के वक़्त बग़ैर खाने के गुज़ारना पड़ता है, शाम होने पर उस के लिए यह ह़द मुक़र्रर है कि इस से पहले वह पूरा परहेज़ रखे और वह ह़द आते ही वह दूसरे सब काम छोड़कर कुछ खा पी ले, इस तरह़ वह खाने के सिल्सिले में अपनी ज़रूरत और पसन्द के अवक़ात के मामले में अपनी मर्ज़ी से अलग होता है, और अपने परवरदिग़ार की मर्ज़ी की पाबन्दी करता है, रोजः में मामला सिर्फ़ खाने पीने ही में परहेज़ व पाबन्दी का नहीं है बल्कि ख़्वाहिश और पसन्द की दूसरी बहुत सी बातों से भी उस को गुरेज़ करना होता है। जैसे जिन्सी तक़ाज़ा की तलब और गुफ़्तगू में दूसरों की ऐबजोई और इसी तरह़ की दूसरी बेएह़तियातियाँ जिन में इन्सानी नफ़्स आज़ादी अख़्तियार करता रहता है, रोज़ः में उन से दूर रहने की पूरी फ़िक्र करना पड़ती है, ग़िज़ा में वक़्त की एक ख़ास पाबन्दी के अ़लावह दूसरों की तंगह़ाली का एह़सास करने और अपनी राह़त व ज़रूरत को पूरा करने में ह़िस्सा लेने की ज़िम्मेदारी भी उस को निभाना पड़ता है।

यह सिल्सिला एक माह चलता है, इस तरह़ रमज़ान का महीना इन्सानियत व शराफ़त और खुदा-ए-वाह़िद के सामने इज़्हार ताबेदारी व बन्दग़ी की तर्बियत का महीना बन जाता है जिस को गुज़ार कर इन्सान अन्दुरूनी ह़ालात के लिहाज़ से पाक व साफ़ तबीअ़त लेकर निकलता है। इन्सान के यह अन्दुरूनी तर्बियत के प्रोग्राम का कोर्स अगर इन्सान उस की पाबन्दी के लिहाज़ से साल बसाल पूरा करता रहता है तो वह साल बसाल इन्सानी ख़ूबियों का ज़ख़ीरा बन जाता है और बेहतर से बेहतर होता चला जाता है, रमज़ानुल् मुबारक का पूरा एक महीना ऐसे

अ़ज़ीम, पाकीज़ह और पाकीज़ह बनाने वाले अ़मल में गुज़रता है जो इन्सान को अपने परवरदिग़ार की नज़र में पसन्दीदा बना देता है, अल्लाह के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) ने बताया है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि आदमी अपने हर अ़मल पर उस की मुक़र्ररह जज़ा का ह़क़्दार होता है, चुनाँचे उस को उस का अज्र उसी के मुताबिक़ मिलेगा सिवाय रोज़े के कि वह ख़ास मुझ से तअ़ल्लुक़ रखता है। इस का अज्र भी अपने ख़ास तरीक़े से दूँगा, रोज़ः की यह खुसूसियत है जो मज़हब के किसी और मामला में नहीं है।

रमज़ान गुज़रता जाता है रोज़ेदार तरक़्क़ी करता जाता है, एक अ़शरे बाद दूसरे अ़शरे में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मज़ीद नेअ़मत व बरकत उस के लिए तय हो जाती है, फिर तीसरा और आख़िरी अ़शरह शुरु होता है, इस में उस को मज़ीद ख़ुसूसियत मिलती है कि उस की एक रात जो बड़ी अ़ज़ीम रह़मतों और बरकतों की रात क़रार दी गई है वह रोज़ेदार को अ़ता की जाती है जो अपने रुत्बे के एतिबार से एक हज़ार महीनों यानी तीस हज़ार दिनों पर भारी है क्योंकि इस में अल्लाह तआ़ला उस को अपने क़ुर्ब ख़ास से नवाज़ते हैं, फ़रिश्ते रूहुल् क़ुदुस के साथ सफ़-ब-सफ़ ज़मीन की तरफ़ आते हैं और नूरानियत का माहौल बना देते हैं, यह रात लैलतुल् क़द्र की रात है जिस का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने अपने क़ुर्आन में ख़ासतौर पर फ़रमाया है। इस ख़ास नेअ़मते ख़ुदावन्दी से भी रोज़ेदार सरफ़राज़ होता है, वह इस मौक़े पर अपने परवरदिग़ार को याद करता है, उस का ज़िक्र करता है तो वह गोया उस के ख़ुसूसी दरबार में ह़ाज़िर होकर करता है इस से उस के अ़मल की तअ़रीफ़ हो जाती है।

रमज़ान के उन्तीस या तीस दिन ऐसी नूरानी कैफ़ियात व ह़ालात में गुज़रकर ईदुल् फ़ित्र का दिन आता है, जो लुत्फ़ व अ़िबादत और राह़त व क़ुबूलियत दोनों को समेटे हुए आता है इस में दुनियावी और दीनी दोनों लिह़ाज़ से ख़ुशी का सामान होता है एक तरफ़ तो उस को अपनी जायज़ पसन्द व ख़्वाहिशात के मुताबिक़ ज़िन्दग़ी गुज़ारने की आज़ादी मिलती है और दूसरी तरफ़ पूरे एक माह इताअ़त व फ़रमाँबरदारी और अ़िबादत के अज्र का फ़ैसला होता है और उस को इन्आ़म से नवाज़ा जाता है इस बिना पर ईद की रात को लैलतुल् जायज़ा यानी



इन्आ़म की रात कहा गया है।

रमज़ान अपने ह़क़ अदा करने वाले को ऐसी पाकीज़गी अ़ता कर देता है जो उस के लिए साल भर तक बरकत व रह़मत बनती है और साल गुज़रने पर फिर इस मुबारक अ़मल का मौक़ा आ जाता है और ख़ैर व बरकत का यह प्रोग्राम दोहराने का मौक़ा मिल जाता है।

रमज़ान का महीना एक मुसलमान को इस बात के एह़सास से वाक़िफ़ करा देता है कि इस ज़मीन पर कितने ऐसे आदमी हैं जो इन्सानी रिश्ते से उसी की तरह़ हैं लेकिन उस को भूक बर्दाश्त करनी पड़ती है और कितने ऐसे हैं जिन को उन के इन्सानी तक़ाज़ों को पूरा करने का पूरा सामान ह़ासिल नहीं। रमज़ान यह भी बताता है कि आदमी को अपने इर्द-गिर्द रहने वाले अपने हमजिन्सों की तक्लीफ़ और दुःख को जानना चाहिए और इस में उस को उन की कुछ न कुछ हमदर्दी भी करना चाहिए, इसीलिए ज़रूरतमन्द की मदद, भूके शख़्स को खाना खिलाना रमज़ान के बहुत पसन्दीदा कामों में क़रार दिया गया है और जब इन्सान रोज़ः रखकर भूक की तक्लीफ़ से गुज़रता है तो यक़ीनन इस को एह़सास होता है कि भूक क्या चीज़ है और इस में हमदर्दी कैसा शानदार अ़मल है और रोज़ः रख कर जब वह नफ़्स के बहुत से तक़ाज़ों से अपने को बाज़ रखने पर मजबूर होता है तो उस को इस बात की मश्क़ का मौक़ा मिलता है कि वह बुरी बातों से अपने नफ़्स को रोके जो क़ाबिले मज़म्मत और अच्छी ज़िन्दग़ी से हम आहंग नहीं हैं, इस तरह़ रमज़ान इन्सान को अच्छा, नेक और पाकीज़ह बनाने का एक निज़ाम लेकर आता है जो इन्सान के लिए एक ज़रूरी निज़ाम है जिस में इन्सान की बेहतरी और ख़ूबी का इन्तिज़ाम होने के साथ उस के परवरदिग़ार की ख़ुशनूदी और रज़ामन्दी का भी इन्तिज़ाम है जिस का एक सिला ईदुल् फ़ित्र की ख़ुशी और अस्ल सिला परवरदिग़ार की रज़ामन्दी का ह़ुसूल और उस की तरफ़ से ख़ुसूसी बदला है।

# रमज़ानुल् मुबारक का पैग़ाम

(यहाँ वह तक़रीर नक़्ल की जा रही है जो हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ हसनी साहब नदवी मद्‌दज़िल्लहुल् आली ने 4/रमज़ानुल् मुबारक 1421 हि० को जुमअ़ की नमाज़ के बाद तकिया शाह अलममुल्लाह (रह०) की मस्जिद में फ़रमाई थी।)

मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी (रह०) का भी ज़िन्दगी भर यही मअ़मूल रहा कि रमज़ानुल् मुबारक गुज़ारने के लिए दूर दराज़ और कुर्ब व जवार से आते थे, हज़रत मौलाना (रह०) की वफ़ात के बाद तकिया के शबो रोज़ उसी तरह गुज़र रहे हैं जिस तरह उन की ज़िन्दगी में गुज़रते थे। हज़रत (रह०) ने वफ़ात से एक दिन पहले मोअतकिफ़ीन और मुक़ीमीन की कसरत को देखकर फ़रमाया था कि यह बानी (हज़रत शाह अलममुल्लाह रह०) का इख़्लास है, यह मस्जिद आबाद रहेगी चुनांचे अहले तअ़ल्लुक़ दूर व नज़्दीक से हस्बे मअ़मूल रमज़ान के मुबारक दिन गुज़ारने आ रहे हैं और यहाँ के माहौल और निज़ाम में रहकर क़ुर्आन व हदीस के दर्स और सीरत-ए-नबवी के अस्बाक़ से फ़ायदा उठाते और शब-व-रोज़ के ज़िक्र व दुआ़ और तिलावत वग़ैरह के मालूमात से फ़ायदा उठाते हैं। अल्लाह तआ़ला इस को क़ायम व दायम रखे। आमीन **(नाशिर)**

भाईयों! अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल व करम है कि उस ने यह मुबारक महीना अ़ता फ़रमाया, कितने ऐसे लोग हैं जो पिछले रमज़ान से इस रमज़ान के दर्मियान दुनिया से रुख़्सत हो गये, अल्लाह तआ़ला ने यह नेअ़मत हमें अ़ता फ़रमाई है उस की क़द्र की ज़रूरत है, अल्लाह तआ़ला नेअ़मत देता है तो यह पसन्द करता है कि बन्दे उस का शुक्र अदा करें।



इर्शाद हैः-

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो हम तुम को बढ़ा कर देंगे और ज़्यादह देंगे और तुम नाशुक्री करोगे, हमारी बात न मानोगे तो हमारी पकड़, हमारा अ़ज़ाब बड़ा सख़्त है।

हज़रात! यह सारी ज़िन्दगी हक़ीक़त में इस्लाम की ज़िन्दगी है, यह सब शुक्र का हिस्सा है अल्लाह तआ़ला को हमारी नमाज़ों और हमारे रोज़ों की ज़रूरत नहीं है इसलिए कि सारी मख़्लूक़ात और हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ करती है अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत करती है, पहाड़ अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं, परिन्दे जो हवा में उड़ते हैं अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं, सारे जानवर सारी मख़्लूक़ात यहाँ तक कि जमादात भी अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ करते हैं, अल्लाह तआ़ला साफ़-साफ़ फ़रमाता हैः-

**"وان من كل شئى الايسبح بحمده"** हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ करती है। इन्सान अगर तस्बीह़ न करे अल्लाह तआ़ला की तो क्या फ़र्क़ पड़ता है? अल्लाह तआ़ला का कोई नुक़्सान नहीं है और न इन्सान की तस्बीह़ और उस की अ़िबादत की अल्लाह तआ़ला को ज़रूरत है। यह ज़रूरत ख़ुद हक़ीक़त में इन्सानों को है कि अल्लाह तआ़ला ने इस क़दर नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई हैं कि इन्सान उन को गिन ही नहीं सकता, शुमार नहीं कर सकता, फ़रमाता हैः-

**"وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها، ان الانسان لظلوما كفّار"** अगर तुम अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत को गिनना चाहो, शुमार करना चाहो तो नहीं शुमार कर सकते, यह इतनी ज़्यादह हैं इतनी कसरत से हैं कि शुमार नहीं कर सकते, और फ़रमाया कि इन्सान बड़ा ज़्यादती करने वाला और बड़ा नाशुक्रा है। इतनी नेअ़मतें अल्लाह तआ़ला ने दी हैं, इतना फ़ज़्ल फ़रमाया है कि उन को आदमी शुमार नहीं कर सकता उस के बाद फिर भी वह शुक्र अदा नहीं करता।

## अल्लाह की नेअ़मतें-

हज़रात! यह शुक्र क्या है? यह ज़ाहिर करे आदमी कि हम एहसानमंद हैं, हम मश्कूर हैं, प्यास के वक़्त अगर आदमी किसी को पानी पिला देता है तो वह

कहता है आप का शुक्रिया, आप ने हमारी प्यास बुझाई, बड़ा एह़सान है कि आप ने हमारी प्यास बुझाई, अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को क्या-क्या दे रखा, ज़िन्दगी दे रखी है, सेह़त दे रखी है, यह अअ़ज़ा (अंग) दे रखे हैं, अअ़ज़ा (अंग) जिन से ज़िन्दगी के बहुत से मामलात में आदमी मदद लेता है, एक-एक चीज़ आप शुमार करना चाहें तो शुमार नहीं कर सकते, एक-एक बाल अल्लाह की नेअ़मत है, एक बाल टूट जाए ग़लत तरीक़े से तो फोड़ा बन जाता है, आदमी उस से मुसीबत में मुब्तिला हो जाता है, रियाह़ का निज़ाम ज़रा सा बिगड़ जाए तो आदमी तक्लीफ़ के मारे तड़पने लगता है और ज़रा सी आँख में तक्लीफ़ हो जाए तो ह़ालत यह होती है आदमी कहता है कि मर जाएँ तो इस से अच्छा है, तो अल्लाह की नेअ़मतें इतनी ज़्यादह है कि आप उन का शुमार नहीं कर सकते और नेअ़मतें अगर कम भी होतीं तो भी उन का शुक्र वाजिब था कि देने वाले का शुक्र अदा करना चाहिए, इसलिए हमें शुक्र अदा करना चाहिए, हमारी नमाज़, हमारा यह रोज़ः सब अल्लाह तआ़ला का शुक्र है, यह कोई हम पर तावान या कोई जुर्माना नहीं है जैसा कि बाज़ मज़ाहिब में समझा जाता है कि यह अ़िबादतें हम पर सज़ा हैं, यह एक जुर्माना तावान या टैक्स नहीं, बल्कि यह हमारी ज़रूरत है कि हम पर अल्लाह का बड़ा एह़सान है।

अल्लाह ने जो हम को दे रखा है उस का हम शुक्र अदा करते हैं कि ऐ परवरदिग़ार! तेरा बड़ा शुक्र है, शुक्र सिर्फ़ ज़बान से अदा कर देना नहीं है, बल्कि अ़मल से भी ज़रूरी है, अगर आप किसी आ़म इन्सान का शुक्रिया अदा करें कि मुँह से कहीं इस तौर पर कि कोई ऐसी चीज़ ज़ाहिर न हो कि मालूम हो कि वाक़ई आप शुक्र गुज़ार हैं तो वह बुरा मानेगा कहेगा कि आप मज़ाक़ करते हैं, हमें चिढ़ाते हैं, तो हम तो ज़बान से भी अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करते तो अ़मल से क्या करते, अल्लाह तआ़ला ने बन्दा के थोड़े अ़मल को भी काफ़ी क़रार दे दिया है, बहुत ज़्यादह हम से अ़मल का तक़ाज़ा नहीं किया है, पाँच वक़्त की नमाज़ें हैं, साल में एक मर्तबः रमज़ान आता है उस के रोज़े हैं और अगर आदमी के पास ताक़त हो, उस के पास पैसे ज़्यादह हों तो ह़ज है और ज़कात का निसाब हो तो ज़कात है यानी थोड़ा काम अल्लाह ने काफ़ी समझा है शुक्र के लिए हम



तो अगर सारी ज़िन्दगी, सारा वक़्त इस में लगा दें कि शुक्र अदा करें और हमारी सारी रातें अ़िबादात में ख़र्च हो जाएँ तब भी हम अल्लाह की नेअ़मत का शुक्र अदा नहीं कर सकते, उस की नेअ़मत का बदला नहीं दे सकते यह तो मुम्किन ही नहीं। अल्लाह तआ़ला ने इसीलिए हम को इस का हुक्म नहीं दिया कि उस की नेअ़मतों का हम बदला दें और अल्लाह तआ़ला हम से बदला चाहता भी नहीं है। अल्लाह तआ़ला तो कहता है कि हम ने इन्सानों को जिन्नों को इसलिए पैदा किया कि वह हमारी अ़िबादात करें, हम ने इसलिए पैदा नहीं किया कि हम को रिज़्क़ पहुचाएँ या हम को खिलाएँ या पिलाएँ। जैसे मुश्रिक करते हैं कि अपने बुतों को खिलाते पिलाते हैं, अपने मअ़बूदों को खिलाने की कोशिश उन के सामने चीज़ें रखकर करते हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम ने तुम्हें इसलिए पैदा नहीं किया कि तुम हमें खिलाओ, पिलाओ, बल्कि अ़िबादत करो और यह अ़िबादत क्या है? शुक्र है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) इस कसरत से नमाज़ पढ़ते कि रात नमाज़ में इतनी देर खड़े रहते थे कि पैरों में वरम आ जाता था, उन से कहा गया कि या रसूलल्लाह! आप (सल्ल०) के तो अगले पिछले गुनाह सारे माफ़ कर दिये गये हैं आप (सल्ल०) तो जन्नती पहले ही से हैं, आप अ़मल करें या न करें आप (सल्ल०) के गुनाह तो सब माफ़ कर दिये गये हैं तो आप (सल्ल०) इतनी मेह़नत क्यों करते हैं? फ़रमाया, क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनू? यानी अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुक्र मैं कैसे अदा न करूँ?

मुझ से जो बन पड़ रहा है वह कर रहा हूँ अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करने के लिए, तो यह नमाज़ें, यह रोज़े, यह ज़कात, यह ह़ज सब ह़क़ीक़त में शुक्र हैं, बन्दे का शुक्र है अल्लाह के लिए, बन्दा बदला नहीं दे सकता अल्लाह तआ़ला के एह़सानात का, लेकिन वह एतिराफ़ तो कर सकते हैं, वह इज़्हार तो कर सकते हैं इस बात का कि अल्लाह तेरा बड़ा शुक्र है, आप ने बड़ी नेअ़मतें दी हैं, हम को बड़ी राहतें दी हैं, हमारी चाहत की चीज़ें दी हैं, तो आदमी को इस अ़मल से जो बहुत में थोड़ा है शुक्र अदा करना चाहिए।

रमज़ान शरीफ़ को अल्लाह ने ख़ास नेअ़मत बनाया है, इस में आ़माल का

सत्तर गुना सवाब यानी इस में नवाफ़िल का सवाब फ़रायज़ के बराबर बढ़ जाता है और फ़रायज़ का सवाब सत्तर गुना, यानी हर नेकी का बदला सत्तर गुना है। आ़म दिनों में आदमी जो नेकी करता है और उस का जो अज्र मिलता है अल्लाह तआ़ला के यहाँ रमज़ान में उस का अज्र सत्तर गुना मिलता है और यह अल्लाह तआ़ला ने इसलिए किया है कि अल्लाह तआ़ला बड़ा रहीम है, जगह-जगह क़ुर्आन में आता है, बार-बार आप नमाज़ में पढ़ते हैं "الرحمن الرحيم"अल्लाह की सब से अ़ज़ीम सिफ़त रहमान की है, यानी वह रहम करने वाला है और फ़रमाया भी है कि अल्लाह ने जब रहम को पैदा किया, रहम की सिफ़त पैदा की तो उस के सौ हिस्से किये, एक हिस्सा तो सारी मख़्लूक़ात को दिया, इन्सानों को, जानवरों को भी यहाँ तक कि एक बकरी जो अपने बच्चे पर पैर रखने से गुरेज़ करती है शफ़क़त की वजह से वह भी इस रहम के अन्दर है जो अल्लाह ने बांटा है और 99 हिस्से अपने पास रखे हैं, जो अपने बन्दों पर वह करेगा, तो अब उस की रहमत का हिसाब लगाना मुश्किल है और उस की रहमत ही है कि इतने गुनाह किये जाते हैं, अल्लाह की इतनी नाफ़रमानी की जाती है दुनिया भर गई है नाफ़रमानी से, लेकिन अल्लाह उस की सज़ा नहीं दे रहा है, बल्कि मौक़ा दे रहा है कि अब तुम छोड़ दो, अब तुम तौबः कर लो, अब तुम लौट आओ, इतना मौक़ा देता है, सारी ज़िन्दगी मौक़ा देता है और फ़रमाता है कि तौबः करने से अल्लाह बहुत ख़ुश होता है।

हदीस शरीफ़ में अ़जीब वाक़िआ़ आता है कि अल्लाह तौबः से इतना ख़ुश होता है इतना ख़ुश होता है कि सोचना मुश्किल है, तो अल्लाह तआ़ला चाहता है कि बन्दे तौबः करें हम गुनाह कर रहे हैं और गुनाहों में मुब्तिला हैं लेकिन अल्लाह मौक़ा देता है कि अब तौबः कर लो, लेकिन अगर आदमी पूरी ज़िन्दगी ऐसे ही गुज़ार देता है, तौबः नहीं करता तो फिर अल्लाह तआ़ला सज़ा देता है और ऐसे के लिए आख़िरत में सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब है, और इस दुनिया के अन्दर भी। बाज़ गुनाह ऐसे होते हैं जो हुदूद से आगे बढ़ जाते हैं, जिस में अल्लाह तआ़ला का मज़ाक़ होता है तो ऐसे गुनाहों की सज़ा दुनिया में भी मिल जाती है और जब क़ौमों को मिलती है तो ज़लज़लों, वबाओं और हवादिस के



ज़रिये से मिलती है और आ़म इन्सानों को मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से सज़ा मिलती है कि आदमी नहीं जानता है कि अल्लाह हम को सज़ा दे रहा है, लेकिन हक़ीक़त में वह अल्लाह की तरफ़ से सज़ा होती है और हम को सोचना चाहिए कि हम को यह तक्लीफ़ यह परेशानियाँ जो पेश आती हैं कभी ग़ौर करना चाहिए कि क्या गुनाह हम ने किये हैं जिन की सज़ा यह हो सकती है लेकिन यक़ीनी नहीं है कि सज़ा हो अल्लाह की तरफ़ से।

लेकिन इस का इम्कान होता है तो यह सोचना चाहिए कि हम ने क्या गुनाह किये हैं और माफ़ी माँगना चाहिए और उन गुनाहों से तौबः करना चाहिए इसलिए कि जब तक ज़िन्दगी बाक़ी है तौबः का मौक़ा बाक़ी है, ज़िन्दगी ख़त्म होने के बाद क़िस्सा ख़त्म है, तौबः का मौक़ा उस वक़्त तक है जब तक कि आदमी को सकरात (दम निकलने) की कैफ़ियत न शुरु हो जाए, जब फ़रिश्ते आ जाते हैं रुह क़ब्ज़ करने के लिए। उस वक़्त दरवाज़ा बन्द हो जाता है, उस वक़्त तौबः करे तो तौबः क़ुबूल नहीं, लेकिन मौत से पहले तौबः क़ुबूल होती है और अल्लाह ने यह मौक़ा दिया है इन्सानों को कि तुम मरने से पहले तौबः कर लो और अल्लाह तौबः को क़ुबूल करता है, हर गुनाह को माफ़ कर देता है, सारे गुनाहों को माफ़ कर देता है जब तौबः सच्चे दिल से की जाए लेकिन तौबः का यह क़ायदा है कि एक तो उस को अफ़सोस हो कि हम से यह क़ुसूर हुआ और दूसरी बात यह कि अ़ज़्म करे कि आइन्दा हम ऐसा नहीं करेंगे और अगर कर रहा है तो उसी वक़्त छोड़ दे, यह तीन शर्तें हैं तौबः की, फिर अल्लाह तआ़ला तौबः क़ुबूल करता है, क़ुबूल ही नहीं करता बल्कि ख़ुश भी होता है।

और हदीस शरीफ़ में मिसाल आती है कि अल्लाह तआ़ला तौबः से इतना ख़ुश होता है कि जैसे कोई शख़्स सुनसान जगह में सफ़र कर रहा है जहाँ कोई ठिकाना नहीं है, कोई खाना पानी की जगह नहीं है, कोई इन्तिज़ाम नहीं है, सारा खाना पानी उस का ऊँट के ऊपर है, रास्ते में वह ठहरता है और सो जाता है और आँख खुलती है तो देखता है कि ऊँट खो गया है, ऊँट गायब है और सब कुछ ग़ायब है, उस ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई सब जगह देखा मगर कहीं नज़र नहीं आया, उस ने सोचा कि अब ऐसी जगह चला गया कि फिर नहीं मिल सकता,

तो वह यह सोच कर कि अब हम मर जाएँगे, अब बचना नहीं है क्योंकि यहाँ खाना पानी कुछ नहीं मिलेगा।

इस के बाद वह मायूस होकर लेट गया और उस की आँख लग गई और उस के बाद जब उस की आँख खुली तो क्या देखता है कि ऊँट खड़ा है और उस का सारा सामान मौजूद है तो ख़ुशी के मारे मुँह से औल फ़ौल निकल गया और बोल उठा कि ऐ अल्लाह! तू मेरा बन्दा है मैं तेरा रब हूँ, तेरा बड़ा एहसान है, ज़बान उसकी लड़खड़ा गई, तो अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे की तौबः से इस से ज़्यादह ख़ुश होता है जितना वह शख़्स ख़ुश हुआ अपना सामान देखकर, तो अल्लाह तआ़ला चाहता है कि बन्दे तौबः करें और कहा भी है कि हम उस को पसन्द करते हैं कि बन्दे तौबः करें, तो अल्लाह ने तौबः करने का ज़िन्दगी भर मौक़ा दिया है और एक तो हम को यह सोचते रहना चाहिए कि हम से क्या ख़ताएँ होती हैं जिन से अल्लाह नाराज़ होता है, अल्लाह के नाराज़गी की जो ख़ताएँ हैं उन से हम बचें, उन को छोड़ दें और शुक्रगुज़ार बन्दे बनें, शुक्रगुज़ार बन्दे का मतलब यह है कि जिस ने हमें इतनी नेअ़मतें दी हैं, इतने एहसानात किये हैं उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई काम न करें, उस को नाराज़ करने वाला कोई काम न करें, एक तो वह हम पर एहसान कर रहा है, हम को दे रहा है और हम हैं कि गोया उस को चिढ़ा रहे हैं और उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कर रहे हैं, दुनिया के किसी आदमी के साथ कोई आदमी ऐसा करे तो वह उसे दो हाथ मारेगा लेकिन उस के बजाय अल्लाह तआ़ला माफ़ कर रहा है इस ख़याल से कि यह शायद तौबः कर ले, तो अल्लाह तआ़ला कितना रहीम है, कितना करीम है कि वह सारे गुनाहों को देखता है और मौक़ा देता है फ़ौरन सज़ा नहीं देता।

लेकिन बाज़ वक़्त तम्बीह के लिए सज़ा देता है कि होशियार हो जाओ, अपने ज़ेहन को ठीक कर लो, देखो तुम ग़ल्ती कर रहे हो अगर तुम अपनी ग़ल्ती से बाज़ न आओगे तो भुगतोगे, तो अल्लाह तआ़ला का यह रहम है कि वह हम को आख़िरत के अ़ज़ाब और पकड़ से बचाना चाहता है।

अल्लाह तआ़ला का निज़ाम ऐसा है कि अगर आदमी गुनाह करेगा, गुनाह से तौबः नहीं करेगा तो आख़िरत में उस की पकड़ होगी और अगर तौबः कर



लेगा तो आख़िरत की पकड़ से बच जाएगा, तो रमज़ान शरीफ़ ख़ासतौर पर अल्लाह की ख़ुसूसी नेअ़मत है और अज्र अल्लाह इस में सत्तर गुना कर देता है ताकि बन्दे को मौक़ा मिले कि वह अच्छे काम करे और उसका इस को बेहतर से बेहतर अज्र मिले यह अल्लाह की मज़ीद रहमत है कि आ़म दिनों में नेकी करने के सवाब का अज्र इस में सत्तर गुना देता है और इस में भी कि आदमी गुनाह करने का जब इरादा करता है तो उस वक़्त तक गुनाह लिखा नहीं जाता जब तक कि गुनाह न कर ले, अगर गुनाह कर लेता है तो एक गुनाह लिखा जाता है। आप देखिए अल्लाह की रहमत का हाल कि आदमी गुनाह करने का इरादा करता है तो उस को नहीं लिखा जाता जब वह कर लेता है तो गुनाह लिखा जाता है वह भी एक गुनाह लेकिन नेकी का इरादा करे तो एक नेकी उसी वक़्त लिख ली जाएगी, सिर्फ़ इरादा पर और जब करेगा तो दस नेकियाँ लिखी जाएँगी, यह अल्लाह की रहमत का हाल है कि वह चाहता है कि किसी तरह बन्दे मुसीबत से बच जाएँ किसी तरह वह आख़िरत में निजात पा जाएँ, किसी तरह वह सहीह काम करें और उस के लिए सिर्फ़ तर्ग़ीब ही नहीं दी बल्कि अल्लाह तआ़ला ने इस का मौक़ा ज़्यादह से ज़्यादह अ़ता फ़रमाया है और रमज़ान उस का बेहतरीन मौक़ा है कि इस में अज्र सत्तर गुना बढ़ जाता है।

अब अगर हम इस से फ़ायदा न उठाएँ तो बड़ी महरूमी क्या बड़ी बेअ़क़्ली की बात होगी कि अल्लाह ने गोया हमारी दअ़वत कर दी है जैसे एक आ़म खाना होता है और एक दअ़वत का खाना होता है तो अल्लाह तआ़ला ने इस महीने में गोया हमारी दअ़वत कर दी है, अब हम दअ़वत में भी शरीक न हों, हम दअ़वत से फ़ायदा न उठाएँ तो यह हमारी बेअ़क़्ली है, आ़म खाना होता है एक आदमी के लिए और एक दअ़वत होती है तो यह दअ़वत है अल्लाह की तरफ़ से कि नेकी करो ख़ूब  पाओ, नेकी करो ख़ूब लूटो, यह लूटने का मौक़ा है और इस का पहला अ़शरा रहमत का है और दूसरा अ़शरा मग़्फ़िरत का है और तीसरा अ़शरा आग से ख़लासी (आज़ादी) का है।

अल्लाह तआ़ला इन्तिज़ार करता है इस चीज़ का कि हमारे बन्दे ज़्यादह से ज़्यादह इस चीज़ से फ़ायदा उठाएँ अल्लाह की रहमत हासिल करें, अल्लाह की

रह़मत के मुस्तह़िक़ हों और इस के बाद दूसरे अ़शरे में मग़्फ़िरत के, यानी गुनाहों से माफ़ी के मुस्तह़िक़ हों और तीसरे अ़शरे में किसी तरह़ आग से निजात पा जाएँ, तो आप सोचिए! कि उस रह़मत की कोई ह़द है कि जो अ़ज़ाब मिलने वाला है, गुनाहों की वजह से और जो अ़ज़ाब तय शुदा है, अल्लाह तआ़ला चाहता है कि यह अ़ज़ाब न मिले, बन्दे उस से बच जाएँ और उन को बचाने की तरह़-तरह़ की तदाबीर अल्लाह ने कर रखी हैं। एक तौबः तो यह हुक्म है कि लोगों को नसीह़त करो, लोगों तक ह़क़ पहुँचाओ, लोगों के इस्लाह़ की कोशिश करो ताकि लोग नेकी अख़्तियार करें और बुराई से बचें।

इस के अ़लावह अल्लाह तआ़ला कभी रमज़ान के ज़रिये, कभी ह़ज के ज़रिये और मुख़्तलिफ़ तरीक़े से अज्र को बहुत ज़्यादह कर देता है ताकि जो कोताहियाँ हुई हैं वह इस के नतीजे में दब जाएँ।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है "ان الحسانات يذهبن السيئات" कि नेकी बुराईयों को ख़ुद मिटा देती हैं, यानी आदमी कोई छोटी ग़ल्ती करता है जिस से अल्लाह तआ़ला के यहाँ उस की पकड़ हो सकती हो और फिर बड़ी नेकी करता हो तो अल्लाह तआ़ला उस के बदले उस की ग़ल्ती को माफ़ कर देता है, नेकी ख़ुद माफ़ करा देती है बहुत से गुनाहों को, इसलिए हमें फ़ायदा उठाना चाहिए आ़म दिनों में भी और रमज़ान में भी, यह तो एक दअ़वत है कि इस में लूट ले आदमी जितना लूट सकता हो, लुटाई जा रही हैं नेकियाँ और अल्लाह तआ़ला इस महीने में शयातीन को बन्द कर देता है, महीना भर के लिए।

अल्लाह के जो नेक बन्दे हैं वह शैतान के चक्कर में नहीं आते हैं, जब कि शैतान अपनी पूरी कोशिश करता है, तो रमज़ान में शैतानों को अल्लाह बन्द कर देता है कि तुम इस महीने में हमारे बन्दों को नहीं बहका सकते हो, तो इस तरीक़े से मुख़्तलिफ़ शक्लें अल्लाह ने पैदा की हैं कि लोग अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने की, अपने को बुराई से बचाने की और आख़िरत में अपने लिए नेअ़मत ह़ासिल करने के इन मौक़ों से फ़ायदा उठाएँ और इस में कोई मुश्किल काम नहीं है कि अल्लाह ने रोज़ः ऐसा नहीं बनाया कि आदमी मुसल्सल भूका रहे इस में यह है कि दिन में तो आदमी नहीं खाता है, रात में खाता है कि आदमी अपनी ख़्वाहिशों



के मुताबिक़ जो चाहे खाए, दिन में परहेज़ करे, लेकिन सिर्फ़ खाने से ही परहेज़ नहीं है बल्कि ग़ीबत से, झूठ बोलने से और उन चीज़ों से भी परहेज़ बताया गया है जिन से अल्लाह नाराज़ होता है और फ़रमाया गया है कि अगर आदमी इन चीज़ों से नहीं बचता है, झूठ से, ग़ीबत से, बुरे कामों से तो अल्लाह तआ़ला को कोई ज़रूरत नहीं है कि आदमी भूका रहे, यह तो भूका रहना है कि रोज़ः अल्लाह के यहाँ रोज़ः कहलाएगा ही नहीं। रोजः तो यह है कि आदमी बुराईयों से भी परहेज़ करे, जो उस की आ़दत पड़ गई है कि झूठ बोल रहा है, ग़ीबत कर रहा है और दुनिया की बेहूदा बातें कर रहा है इन सब से परहेज़ करना ज़रूरी है।

रोज़ः मस्ले के लिह़ाज़ से तो हो जाएगा लेकिन अल्लाह तआ़ला के यहाँ वह रोज़ः मक़्बूल होना मुश्किल है, तो आदमी खाना तो छोड़ देता है लेकिन दूसरे गुनाहों में मुब्तिला रहता है, झूठ बोलने में और ग़ीबत वग़ैरह में तो उस से उस का रोज़ः ख़राब हो जाता है और उस को अल्लाह तआ़ला मन्ज़ूर करेगा या नहीं करेगा यह उस का मामला है, लेकिन यह तम्बीह कर दी गई है, यह बता दिया गया है कि अल्लाह को इस की ज़रूरत नहीं है कि आप बिलावजह भूके रहें, आप तो भूके ही रहे इसलिए कि आप ने वह अ़मल तो किया नहीं जो अल्लाह को मक़्बूल व पसन्दीदह हो, तो इन चीज़ों से परहेज़ करना चाहिए।

दूसरे यह कि जितने नेकी के काम हो सकते हैं, जिन के करने की अल्लाह इस्तिाअ़त (ताक़त) दे वह करने चाहिए, नेकी में तो एक अहम नमाज़ है, नमाज़ का एहतिमाम और तिलावत करना चाहिए।

क़ुर्आन मजीद का इस महीने से ख़ास तअ़ल्लुक़ है, अल्लाह तआ़ला ने पूरा क़ुर्आन मजीद इसी महीने में उतारा आसमाने दुनिया पर, फिर वहाँ से थोड़ा-थोड़ा कर के जैसी ज़रूरत पड़ी उतारा। इसलिए इस महीने को क़ुर्आन मजीद से बड़ी मुनासिबत है, इसलिए इस में क़ुर्आन मजीद की तिलावत करना और सुनना भी चाहिए और अपने अवक़ात को क़ुर्आन मजीद को पढ़ने और सुनने से भर देना चाहिए। क़ुर्आन मजीद की तिलावत ख़ुद एक अ़िबादत है कि क़ुर्आन मजीद के हर-हर ह़र्फ़ पर दस नेकियाँ मिलती हैं तो अब आप सोचिये कि क़ुर्आन मजीद की तिलावत करने वाला कितनी नेकियाँ ह़ासिल कर सकता है

और लफ़्ज़ पर नहीं हर हर्फ़ पर नेकी है और फ़रमाया कि "الٓمٓ" में अलिफ़ एक हर्फ़ है, लाम दूसरा हर्फ़ है और मीम तीसरा हर्फ़ है। "الٓمٓ" जहाँ कहा आदमी ने सच्चे दिल के साथ, अल्लाह तआ़ला की रज़ा को सामने रख कर तो उस को 30 नेकियाँ मिल गईं, 30 नेकियाँ उसी वक़्त मिल गईं जब उस ने "الٓمٓ" अदा किया, लेकिन शर्त यही है कि अल्लाह के लिए और उसी को राज़ी करने के लिए सवाब की नियत से कर रहा हो जो सवाब अल्लाह ने रखा है तब अल्लाह तआ़ला सवाब अ़ता फ़रमाता है, लेकिन अगर खेल तमाशा में कहता है या जी कहीं और लगा हुआ है तो उस का मामला मुख़्तलिफ़ है, तो इस में कर सकता है तो तिलावत करनी चाहिए, नवाफ़िल पढ़ना चाहिए, अल्लाह ने इस में ख़ासतौर पर तरावीह़ रखी है कि आदमी उस में बीस रकअ़त पढ़ता है।

बाज़ लोग 10 रकअ़त पढ़ते हैं लेकिन उस में जितनी नमाज़ें पढ़ सकता है नवाफ़िल के तौर पर, तरावीह़ में, रात को तहज्जुद में पढ़ना चाहिए, जितनी नेकियाँ आदमी ह़ासिल कर सकता है वह करे और जहन्नम की आग से अपने को बचाने की फ़िक्र करे।

इसलिए कि हमारे गुनाह इतने ज़्यादह हैं कि अगर हम तौबः करें तो शायद काम चले, अल्लाह तआ़ला से डरना चाहिए कि अगर अल्लाह तआ़ला नाराज़ हो जाएगा तो हमारा कहाँ ठिकाना है? दुनिया में हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला हम को ढ़ील दे दे लेकिन आख़िरत की पकड़ बहुत सख़्त है। अल्लाह तआ़ला दुनिया में ढ़ील दे देता है, इसलिए हम को जो नेकी के मवाक़े हैं उन से फ़ायदा उठाना चाहिए और रमज़ान में झूठ से, ग़ीबत से, धोकाधड़ी से और जो खुले हुए गुनाह हैं उन से बहरहा़ल बचने की पूरी कोशिश करना चाहिए, अगर आ़दत है तो आ़दत को बदलना चाहिए और उस के साथ-साथ यह कि ग़रीबों की मदद करना, दूसरों के साथ इख़्लाक़ से पेश आना, दूसरों की मदद करना, यह नेकी के काम हैं जो ज़्यादह से ज़्यादह इस महीने में करने की ज़रूरत है, इसलिए कि इस में जो नेकी लिखी जाएगी वह 70 गुना है, तो ऐसा मौक़ा साल भर नहीं आता, यह एक महीने का मौक़ा होता है, इसलिए जो बुज़ुर्ग लोग होते हैं वह इस महीने में गोया बिल्कुल अपने को मसरूफ़ कर लेते हैं अ़िबादत में, अल्लाह की



याद में, ज़िक्र में और जब महीना ख़त्म होता है तो बहुत अफ़्सोस करते हैं कि इतना अ़ज़ीम मौक़ा और ऐसी नेअ़मत का मौक़ा हमारे हाथ से जाता रहा, अल्लाह तआ़ला ने यह मौक़ा हम को अ़ता फ़रमाया है, यह अल्लाह का बड़ा एह़सान है कि हम को उस ने फिर यह मौक़ा अ़ता फ़रमाया कि जिस में हम थोड़ा भी काम करेंगे तो वह बहुत होगा, इसलिए हमें इस से फ़ायदा उठाना चाहिए और महीने की क़द्र करना चाहिए, रोज़ः तो हर हा़ल में रखना चाहिए और अल्लाह के रज़ा की नियत और सवाब की उम्मीद रखनी चाहिए, इस में जो चीज़ें मना हैं उन से पूरा परहेज़ करना चाहिए ताकि रोज़ः रखें तो रोज़े का फ़ायदा भी हो, वरना ऐसा न हो कि अल्लाह तआ़ला के यहाँ हम को भूका तस्लीम कर लिया जाए कि हाँ, यह भूका रहा और कुछ न समझा जाए, तो इस की कोशिश करना चाहिए कि हमारा रोज़ः रोज़ः समझा जाए, अल्लाह तआ़ला के यहाँ वह रोज़ः तस्लीम किया जाएगा ऐसा न हो कि हम रोजः रखें, भूके रहें लेकिन अल्लाह तआ़ला के यहाँ सिर्फ़ भूका तस्लीम किया जाए, रोज़ादार न तस्लीम किया जाए, तो जब हम परहेज़ करेंगे गुनाहों से, बुरी बातों से और उन ग़लत बातों से जो हर वक़्त करते रहते हैं उन से परहेज़ करेंगे, अल्लाह को याद करेंगे, जो नवाफ़िल हैं उन को बहुत पाबन्दी के साथ और नमाज़ें जमाअ़त के साथ अदा करेंगे तो इस महीने का जो फ़ायदा हम को पहुँच सकता है पहुँचेगा।

अल्लाह तआ़ला मुझ को और आप को भी सही़ह़ बात के अख़्तियार करने और उस पर अ़मल करने और कोताहियों और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

# मुसलमानों की ईद-शैतान का रोजः

मुसलमानों को इस्लाम ने दो ईदें अ़ता की हैं, एक ईदुल् फ़ित्र दूसरी ईदल् अज़्हा। यह दोनों ईदें और त्योहार रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मदीना मुनव्वरह हिज्रत फ़रमाने पर अहले मदीना के त्योहारों को देखकर मुसलमानों को परवरदिग़ारे आ़लम के हुक्म से उन की ज़रूरत और खुसूसियात का लिहाज़ रखते हुए बताए थे, उस वक़्त से यह मुसलमानों के त्योहार हैं जिन को तमाम दुनिया के मुसलमान जो दुनिया के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में फैले हुए हैं और अपनी ज़िन्दग़ी को अपने रसूले पाक (सल्ल०) के बताए हुए तरीक़े का पाबन्द मानते हैं, खुशी के दिन की ह़ैसियत से अख़्तियार करते और मनाते हैं, दुनिया के तमाम मुल्कों और क़ौमों में अपने-अपने ह़ालात व खुसूसियात के लिहाज़ से त्योहार होते हैं, हर क़ौम के त्योहार में इस क़ौम के मज़हबी वाक़िआ़त या मौसमों की तब्दीली के साथ एक तअ़ल्लुक़ होता है और इस तरह़ हर क़ौम का त्योहार उस की अपना मज़हबी और दुनियावी कल्चर होता है, जिस में उस क़ौम के क़ौमी एह़सासात और दीनी तसव्वुरात की झलक मिलती है इसलिए त्योहार एक ऐसा मौक़ा होता है कि इस में क़ौम के सब ख़ास व आ़म यकसाँ तरीक़े से ह़िस्सा लेते हैं और इस तरीक़े से उन तसव्वुरात से अपनी वाबस्तग़ी का सुबूत देते हैं, जो त्योहार के पेशेनज़र होते हैं।

मुसलमानों में ईदुल् फ़ित्र और ईदुल् अज़्हा उन के दीनी और मिल्ली तसव्वुरात का मज़हर (परिचायक) है। मुसलमानों के तसव्वुरात खुदा-ए-वाह़िद की बन्दग़ी और उस की इताअ़त के एह़सास से वाबस्ता हैं, इस बन्दग़ी और इताअ़त के एह़सास को उन की खुशी के साथ जोड़ दिया गया है। चुनाँचे मुसलमानों की यह ईदें एक वक़्त में इताअ़ते खुदावन्दी का निशान और खुशी का मौक़ा हैं। ईदुल् फ़ित्र एक माह के रोज़ों के ख़त्म पर आती है और ईदुल् अज़्हा खुदा के हुज़ूर में नज़राना बन्दग़ी पेश करने की निशानी के तौर पर अन्जाम पाती है इस तरह़ दोनों दिन इताअ़त खुदावन्दी और उस के लिए अपनी मिसाली कारकिर्दगी के



अन्जाम देने पर खुशी के दिन होते हैं।

इस्लाम ने मुसलमानों को दुनिया व दीन दोनों को जमा करने की तल्क़ीन की है, दुनिया के वह तक़ाज़े जो इन्सानी फ़ित्रत का नतीजा हैं, उन को पूरा करने की न सिर्फ़ यह कि इजाज़त दी है बल्कि अगर उन के पूरा करने में यह एह़सास शामिल रखा जाए कि उन के पूरा करने की हम को हमारे खुदा ने अपनी खुशी के साथ इजाज़त दी है और हमारे रसूल बरह़क़ ने इस इजाज़त को खुदा की मर्ज़ी की इजाज़त बताया है तो इन दुनियावी तक़ाज़ों को पूरा करने में भी वह सवाब मिलता है जो अ़िबादत में मिलता है, उस को अपनी दुनियावी ज़रूरत को खुदा की इजाज़त की बिना पर पूरा करने से भी अज्र मिलता है, चुनांचे ईदुल् फ़ित्र हो या ईदुल् अज़्हा उन में अच्छा लिबास पहनना और खुशी का इज़्हार करना भी अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की इजाज़त को मद्देनज़र रखते हुए करने पर सवाब मिलता है।

फिर दोनों ईदों के पीछे जो मज़हबी वजह है वह इन दोनों ईदों को सिर्फ़ सवाब का मौक़ा ही नहीं बल्कि इन दिनों को पूरा मज़हबी मौक़ा बना देता है कि एक तरफ़ तो अच्छा लिबास पहनना, पसन्दीदा खाना, एक दूसरे से मसर्रत व लुत्फ़ का इज़्हार करना, जश्न की शक्ल में सब का ईदगाह जाना, दोगाना अदा करना, वापस आना और ईद की मुबारकबाद देना, मिलना और पुरलुत्फ़ तरीक़े से खाना खाना, खिलाना मिलता है।

दूसरी तरफ़ मज़हबी तरीक़े से तहारत व सफ़ाई करना संजीदा तरीक़ा से और दुआ़ओं के साथ ईदगाह जाना और वहाँ सब को मिल कर अपने परवरदिग़ार के सामने सर-ब-सुजूद होना, इमाम व ख़तीब से नसीह़त सुनना, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर का विर्द करना और अपने परवरदिग़ार का शुक्र बजा लाना मिलता है।

ईदुल् फ़ित्र में अपने परवरदिग़ार का शुक्र कि उस ने महीने भर के रोज़ों का जो हुक्म दिया था, उस हुक्म को बजा लाने की तौफ़ीक़ मिली, किसी ने अगर कुछ रोज़े छोड़ दिये तो इसलिए कि उस के परवरदिग़ार की तरफ़ से इजाज़त है कि बीमार हो या सफ़र पर हो तो आइन्दा के लिए रोज़ः मुवख़्ख़र करते हुए आ़म

दिनों की तरह़ खा पी सकते हो, लेकिन सरेबाज़ार नहीं बल्कि ज़रा नज़रों से बच कर ताकि रोज़ः की जो उ़मूमी फ़िज़ा है वह ख़राब न हो।

## ई़द की ख़ुशी–

एक माह की एक ख़ास कारकर्दगी पूरी की है उस का सवाब भी मिलेगा और खुश हो और ख़ुशी का इज़्हार भी करो, अब रह गये वह लोग जो बिला उ़ज़्र केवल कोताही में यह फ़र्ज़ रोज़े नहीं अन्जाम दे सके उन को ई़दुल् फ़ित्र यह एह़सास दिलाती है कि उन से कोताही हुई कि सब भाई बन्द तो अच्छे काम करके सुर्खरु हुए और यह उस सुर्ख़रुई से रह गये अब यह अपने परवरदिग़ार से माफ़ी के तालिब हों और इस की तलाफ़ी क़ज़ा की सूरत में करें, लेकिन उस के साथ साथ अपने परवरदिग़ार की तरफ़ से अ़ता किये हुए ख़ुशी के इस मौक़े में शरीक रहें, ख़ुशी का दिन है और परवरदिग़ार की तरफ़ से अ़ता किया हुआ है उस को लें और उस से अपने को मह़रूम न करें।

ई़द का दिन ख़ुशी और खाने–पीने का दिन ख़ुद परवरदिग़ारे आ़लम की तरफ़ से बनाया गया है इसलिए उस के ख़िलाफ़ करने की भी इजाज़त नहीं है, ई़द के दिन कोई रोज़ः रखना चाहे तो ख़ुद रोज़ः रखना अच्छा और नेकी और अ़िबादत का अ़मल है, लेकिन ई़द के दिन वह ह़राम है क्योंकि जब परवरदिग़ार यह कहता है कि खाओ पियो और ख़ुश हो, ऐसे में बन्दा के लिए कैसे इस की इजाज़त हो सकती है कि हम सुबह़ से शाम तक कुछ नहीं खाएँगे रोज़ः रखेंगे।

## शैतान का रोज़ः–

ह़दीस शरीफ़ में आया है कि ई़द के दिन शैतान रोज़ः रखता है, लेकिन उस को रोज़ः अपने परवरदिग़ार को ख़ुश करने या उस के हुक्म की इताअ़त में नहीं होता, वह इस रंज व ग़म में होता है कि कितनी कसरत से आदमियों ने अपने परवरदिग़ार की ज़बरदस्त इताअ़त कर दिखाई कि पूरे एक महीने, दिन में भूके प्यासे रहे और कितने बशरी तक़ाज़ों को दिन के ह़िस्से में रोके रहे, ऐसी ज़बरदस्त इताअ़त अन्जाम पा गई लिहाज़ा इस अफ़्सोस में शैतान कुछ खाता पीता नहीं गोया रोज़ः रखता है और ख़ुशी के इस मौक़े पर ग़म मनाता है।



रोज़ों की कामियाबी वाक़ई एक आ़ला काम है जिस के बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हर अ़मल का अज्र तो इस तरह़ दिया जाएगा जैसा मुक़र्रर किया गया है, लेकिन रोज़े का अज्र मैं ख़ुद ख़ास तरीक़े पर अपनी तरफ़ से दूँगा, इसलिए शैतान का ई़द के दिन रोज़ः रखना और ग़म करना बजा है कि उस के शिकार से कितने इन्सान न सिर्फ़ यह कि बच निकले बल्कि इस की तद्‌बीर व कोशिश को बर्बाद कर गये और रोज़ेदारों की ख़ुशी भी बजा है कि उन्होंने अपने को शैतान के नरग़े से बचा लिया और अपने परवरदिग़ार को राज़ी व ख़ुश किया, वह अपने परवरदिग़ार की अ़ज़्मत और वह़दानियत का कलिमा पढ़ते हुए ई़द के रोज़ नमाज़ के लिए जाते हुए यह अल्फ़ाज़ अदा करते हैं,

**"الله اکبر الله اکبر لا اله الا الله والله اکبر الله اکبر ولله الحمد"**

अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है उस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, अल्लाह सब से बड़ा है अल्लाह सब से बड़ा हर तरह़ की सताईश (तअ़रीफ़ें) और ख़ूबी उसी के लिए है और इस तरीक़े से वह शैतान के रोज़े को और भी सख़्त और तक्लीफ़ का रोज़ः बना देते हैं।

# ईदुल् फ़ित्र एक माह के तर्बियती निज़ाम से गुज़रने की ख़ुशी का नाम है

ईदुल् फ़ित्र मुसलमानों का एक ऐसी ख़ुशी का दिन है जो अपने में ख़ुशी के कई पहलू रखता है, इस दिन की एक बड़ी ख़ुसूसियत यह है कि यह दिन माज़ी की किसी शख़्सियत के किसी ख़ुशी या फ़िक्र और परेशानी के वाक़िये से तअ़ल्लुक़ नहीं रखता, बल्कि यह ईद करने वालों के ख़ुद अपनी ख़ुशी के अस्बाब से तअ़ल्लुक़ रखता है, इन दिनों में उन को जिन एह़सासात से गुज़रना पड़ा वह इस ख़ुशी के पीछे कार फ़रमा होते हैं, ईद के इस दिन से पहले पूरे एक माह उन्होंने रोज़े रखे, यह रोज़े एक माह तक मुसल्सल सुबह़ व शाम तक खाने पीने से रुके रहे, चुनांचे यह रोज़े रखने वालों को भूक प्यास की तक्लीफ़ के एह़सासात से रोज़ाना वास्ता पड़ता है और इसी तरह़ एक ख़ुशह़ाल को भी इस इन्सानी तक़ाज़े के पूरा न होने के अ़मली एह़सास से गुज़रना होता है जो आ़मतौर से कम रोज़ी वालों को पेश आता है, इस तरह़ ख़ुशह़ाल रहने वाले को भी इस का अन्दाज़ा व तजुर्बा होता है कि वसायल से मह़रूम और मआ़शी तंगी से गुज़रने वाले लोगों पर बर्दाश्त की कैसी कैफ़ियत गुज़रती है?

इसी के साथ-साथ दिन के दस बारह घंटे बिल्कुल खाने पीने की हर चीज़ से बिल्कुल रहने के बाद रोज़ेदार को जब खाने पीने का मौक़ा मिलता है तो सिर्फ़ यही नहीं कि इस की ज़रूरत पूरी होती है बल्कि इन्सानियत की एक यह तस्कीन भी होती है कि हम ने दूसरे इन्सानों की तक्लीफ़ का तजुर्बः किया, इस मौक़े के लिए रोज़ेदारों को उन के मज़हब की तरफ़ से नसीह़त भी की गई है कि वह अपने साथ दूसरों को भी भूक प्यास के इन इन्सानी तक़ाज़े को पूरा करने में शरीक करने की कोशिश करें, इस में इस तरह़ इस बात की थोड़ी मश्क़ (प्रेक्टिस) भी होती है कि मह़रूमी से गुज़रने वाले की मह़रूमी को मह़सूस किया जाए और उस के साथ हमदर्दी क़ाबिले अ़मल हो तो वह की जाए।



एक माह तक रोज़ाना खाने पीने से बिल्कुल परहेज़ के एक वक़्त तक गुज़रना एक ऐसा शुऊर पैदा कर देता है जिस से इन्सान को इन्सानी ज़िन्दगी की इस तक्लीफ़ का ख़ासा तजुर्बः हो जाता है और उस के दिल में नर्मी पैदा होती है, इसी के साथ-साथ उस के लिए यह अ़मल एक तर्बियती कोर्स भी बन जाता है। यह तो होता है रोज़े का आ़म इन्सानी पहलू, इस के अ़लावह इस का सब से अहम पहलू है इस का मज़हबी पहलू कि रोज़ेदार ने अपने रब के हुक्म की तअ़मील तक्लीफ़ उठा कर भी की, इस सिल्सिले में हर मुसलमान को यह बताया गया है कि इस मह़रूमी व बर्दाश्त पर अ़मल वह अपने किसी दुनियावी फ़ायदे के लिए नहीं बल्कि सिर्फ़ अपने परवरदिग़ार की रज़ामन्दी की तलब में करे, इस से उस को अपने रब की ख़ुशनूदी बड़े पैमाने पर ह़ासिल होगी और रोज़े का अस्ल पहलू यही बताया गया है और इसी का असर है कि सख़्त से सख़्त मौसम में और ज़रूरत की ह़ालत में भी रोज़ेदार ख़ुशी-ख़ुशी बआसानी रोज़ः रख लेते हैं, इसलिए कि उन को अपने रब की ख़ुशनूदी की वाक़ई फ़िक्र होती है।

इन दोनों बातों की वजह से रोज़ः दो अच्छे पहलुओं पर हो जाता है। एक तो यही पहलू यानी अपने रब की इताअ़त और ख़ुशनूदी की तलब में कुछ तक्लीफ़ बर्दाश्त करना और दूसरा उसी तरह़ की मह़रूमी से गुज़रने वाले इन्सानों की तक्लीफ़ का एह़सास करना और ऐसों की कोई मदद हो सके तो मदद का जज़्बा मह़सूस करना, ज़ाहिर है कि यह ऐसे अ़ज़ीम अ़मल हैं जिन में दो अच्छे और अहम पहलू पाये जाते हैं, 29-30 दिनों तक बराबर रोज़ाना कामियाबी के साथ गुज़रने पर जो भी ख़ुशी ह़ासिल हो वह कम नहीं, वह इस पूरे मरह़ले से गुज़र कर जब ईद के दिन यह देखता है कि 30 दिनों तक की वह पाबन्दी अब नहीं रही, और यह कि उस को यह दिन ख़ुश होने बल्कि ख़ुशी के इज़्हार के लिए बतौर इन्आ़म दिया गया है, और उस को इस का मौक़ा दिया गया है कि वह आज अपनी ख़ुशी और अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ इस सहूलत की बह़ाली की ख़ुशी ह़ासिल करे, उस के ख़ुशी का यह ह़ुसूल उस के लिए एक तरफ़ जश्न की शक्ल में भी हो और दूसरी तरफ़ दीनी नुक़्त-ए-नज़र से उस के लिए इन्आ़म हो।

चुनाँचे ईद के रोज़ उस की खुशी का इज़्हार सिर्फ़ इन्फ़िरादी (अकेले) ही नहीं होता बल्कि इन्फ़िरादी के साथ-साथ इज्तिमाई (सामूहिक रूप से) भी होता है, इन्फ़िरादी लिहाज़ से उस को अपने महदूद दायरे में ख़ुशी और सहूलत का एहसास होता है और इज्तिमाई तौर पर इस ख़ुशी और सहूलत को आपस में एक दूसरे के साथ तबादला खुशी की अ़मली शक्ल हासिल होती है और यह अ़मली शक्ल पूरे आबोताब के साथ इस तरह ज़ाहिर होती है कि बस्ती के सारे लोग दोगाना पढ़ने के लिए एक जगह मिलकर जमा होते हैं, और एक दूसरे के साथ खुश रहते हैं, फिर एक दूसरे के घर जाने की कोशिश करते हैं और शीरीनी खाकर इस ख़ुशी का इज़्हार करते हैं।

जब उजले और नये कपड़ों में बूढ़े, जवान और बच्चे जो अपने माँ बाप की मुहब्बत व शफ़क़त के नतीजे में अच्छे-अच्छे खुशनुमा लिबास में फूलों की तरह अपने बड़ों के साथ ईदगाह में जमा होते हैं तो एक अ़जीब बहार का मन्ज़र आता है, एक महीने के तर्बियती निज़ाम से गुज़रने की ख़ुशी, फिर इस माह से जो रूहानी फ़ायदे हुए उन की ख़ुशी और उस की शबेक़द्र जो अपनी छोटी सी मुद्दत में हर बरस की बरकतें समेटे हुए होती हैं उस से गुज़रने की ख़ुशी और इस माह के इस ख़ास मरहले से गुज़रकर गोया नया साल शुरु करने की ख़ुशी, रमज़ान की इस ईद के दिन सब इकट्ठा हो जाती है और इस में ख़ुशी की वह मिक़्दार महसूस की जाती है जो साल के दूसरे ऐसे ख़ुशी के मौक़ों पर नहीं महसूस होती और इस का जो इज़्हार इन्फ़िरादी (अकेले) और इज्तिमाई (सामूहिक रूप से) दोनों शक्लों में होता है उस का 'ईद मुबारक' के शब्द से एक दूसरे के सामने इज़्हार किया जाता है।